Fortnightly per copy Rs. 4/- ओ३म् 18th August 2022

आर्य जीवन
ఆర్య జీవన్

संस्कृति संरक्षण व सामाजिक परिवर्तन का संकल्प
హిందీ-తెలుగు ద్విభాషా పక్ష పత్రిక

Website : http://www.aryasabhaapts.org Narendra Bhavan Telephone : 040 24760030

Date of Publication 2nd and 17th of every Month, Date of Posting 3rd and 18th of every Month

।।ओ३म्।।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
WORLD COUNCIL OF ARYA SAMAJ

"दयानन्द भवन", 3/5, आसफ अली रोड
(रामलीला मैदान), नई दिल्ली-110002
"Dayanand Bhawan", 3/5, Asaf Ali Road
(Ramlila Ground), New Delhi-110002

फा. सं. सार्व. आ. प्र.सभा/22/1697 10-08-2022

सेवा में,
आदरणीय श्री नरेन्द्र मोदी जी
प्रधानमंत्री, भारत सरकार
साऊथ ब्लॉक, नई दिल्ली-110001

माननीय प्रधानमंत्री जी,

सादर नमस्ते!

बड़ी प्रसन्नता की बात है कि आप स्वस्थ एवं सानन्द हैं। स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर 15 अगस्त को दिल्ली के ऐतिहासिक लाल किले की प्राचीर से आप पूरे राष्ट्र को सम्बोधित करेंगे। जैसा कि देश में स्वतंत्रता आन्दोलन के अमृत महोत्सव को जोश-खरोश के साथ मनाया जा रहा है। उसी परिप्रेक्ष्य में मैं सम्पूर्ण आर्य जगत की भावनाएँ आप तक पहुँचा रहा हूँ। पूरा देश भली भांति जानता है कि स्वतंत्रता आन्दोलन में युग प्रर्वतक महर्षि दयानन्द सरस्वती एवं उनके अनुयायियों तथा आर्य समाज संगठन की महत्त्वपूर्ण भूमिका रही है।

आर्य जगत की इच्छा है कि आप 15 अगस्त को अपने राष्ट्र के नाम सम्बोधन में महर्षि दयानन्द और आर्य समाज के योगदान की चर्चा अवश्य करने का कष्ट करें। अमृत महोत्सव के अवसर पर लाल किले की प्राचीर से आपके द्वारा महर्षि दयानन्द जी को दी जाने वाली श्रद्धांजलि से आर्य जगत को अपार हर्ष होगा और एक ऐतिहासिक तथ्य पूरे राष्ट्र की जनता के समक्ष उपस्थित होगा। आशा है आप हमारी भावनाओं को समझते हुए इस विषय को अपने व्याख्यान में सम्मिलित कर अनुगृहीत करेंगे।

धन्यवाद सहित,

भवदीय

(स्वामी आर्यवेश)

दूरभाष : 011-23274771, 23260985, टेलीफैक्स : 011-23274216
ई-मेल : sarvadeshik@yahoo.co.in
वेबसाईट : www.vedicaryasamaj.com

गहरा षड्यन्त्र

-डॉ. सोमदेव शास्त्री

आज पूरे देश में आजादी का अमृत महोत्सव उत्साहपूर्वक मनाया जा रहा हैं घर-घर तिरंगा ध्वज फहराया जा रहा है। ग्राम-नगर एवं महानगरों में पर्वतों की चोटियों और मैदानों में भारतीय ध्वज तिरंगे को लेकर आबाल-वृन्दनर भारत माता को जय, वन्दे मातरम्, के उद्घोषों से आजादी की सुरक्षा को भाजा को जगा रहे है, देश आजादी के लिए अपने प्राणों की आहुति देने वाले स्वतंत्रता सेनानियों को स्मरण कर रहा है, सभी राजनैतिक पार्टियां और उनसे जुडे हुए नेता अपने को देशभक्त दिखलाने की प्रतिस्पर्धा मे लगे हुए है किन्तु स्वतंत्रता का सर्वप्रथम उद्घोष करने वाले महर्षि दयानन्द का उल्लेख न करके कृतघ्नता का पाप कर रहे हैं।

सन् १८५७ का प्रथम स्वाधीनता आन्दोलन अंग्रेजो ने बड़ी क्रूरता से कुचल दिया, सेना में भारतीय सैनिकों की संख्या बहुत कम करके अंग्रेज सैनिकों की संख्या बढ़ा दी, शासन ब्रिटिश सरकार ने अपने हाथों में ले लिया तथा महारानी विक्टोरिया ने १८५८ में घोषणा की कि ''मैं भारत की खुशहाली चाहती हूँ''। महारानी विक्टोरिया की घोषणा पर फटाक्ष करते हुए ऋषि दयानन्द ने लिखा कि कोई कितनी ही (लुभावनी घोषणा) करे किन्तु स्वदेशी राज्य (स्वराज्य) सर्वोपरि अर्थात् सबसे उत्तम होता है।

अंग्रेज अधिकारी के पूछने पर ऋषि दयानन्द ने निर्भीकतापूर्वक कहा था कि मैं तो परमेश्वर से प्रतिदिन प्रार्थना करता हूँ कि हे परमेश्वर ! वह दिन शीघ्र आवे जिस दिन विदेशियों का राज्य हमेशा के लिए समाप्त हो जाए, और भारत में भारतीयों का राज्य हो जाए। जब अंग्रेजी पठित व्यक्तियों में यह हीन भावना पैदा हो रही थी।

कि ऋषि मुनि कुछ नहीं जानते थे, अंग्रेजो के कारण भारत की उन्नति हो रही है। इस भ्रम को दूर करते हुए ऋषि ने घोषणा की थी कि भारत ही एक ऐसा देश है कि दुनिया में सारी विद्या भारत से ही फैली (एतद्देश) इसकी प्रशंसा विदेशी विद्वानों ने भी अपने ग्रन्थों में की, इसके सदृश भूगोल में कोई दूसरा देश नही है। यही देश पारसमणि पत्थर है जिसे विदेशी लोहेरूपी देश, छूकर सोने के (अर्थात् वैभवशाली) हो जाते हैं। ब्रह्म समाज और प्रार्थना समाज की आलोचना करते हुए ऋषि ने लिखा कि ये लोग ऋषि मुनियों की प्रशंसा न करके भरपेट निन्दा करते हैं।

भारतीयों को याद दिलाया देखो ! ये अंग्रेज अपने देशी (भारत के बने हुए) जूते को ऑफिस में नहीं जाने देते है, इतना दूर (अपने देश से) आकर भी अपने वस्त्र और जूतों को इन्होंने नहीं छोड़ा'' इस प्रकार भारतीय अस्मिता को लगाने का आजीवन प्रयास ऋषि दयानन्द ने कार्य किया।

महर्षि दयानन्द की प्रेरणा से आर्य समाज लाहौर ने सन् १८७९ में देशी वस्त्र (खादी) और देशी खापड की दुकान खोली और स्वदेशी वस्त्रों को पहनने की प्रतिज्ञा आर्य समाज के सदस्यों ने की। मारवाड़ राज्य का प्रत्येक राज कर्मचारी पाली की बनी खादी को ही पहनेंगे, यह आदेश जोधपुर नरेश ने ऋषि दयानन्द की प्रेरणा से दिया था। सन् १८८२ में पंजाब में जब हण्टर कमीशन आया तब ऋषि दयानन्द ने आर्य समाज के अधिकारियों से कहा था कि हण्टर कमीशन के आगे यह मांग रखना कि कोर्ट और तहसील की भाषा, हिन्दी हो।

महर्षि दयानन्द ने अपने शिष्य तथा आर्य समाज मुम्बई के सदस्य श्यामजी कृष्ण को लन्दन जाने की तथा देश की आजादी के लिए प्रयत्न करने की प्रेरणा दी। श्यामजी कृष्ण वर्मा ने लन्दन में ''इण्डिया हाऊस'' की स्थापना करके उस स्थान को आजादी का प्रेरणा स्थल बना दिया, जहा दादा भाई नैरोजी, भाई परमानन्द, महात्मा गाँधी, वीर सावरकर, लाला हरदयाल, मदनलाल धींगड़ा, मेडम कामा आदि देश भक्त क्रान्तिकारी रहकर देश की आजादी के लिए प्रयत्न करते रहे।

आर्य समाज मेरी माँ और ऋषि दयानन्द मेरे धार्मिक पिता है की घोषणा करने वाले लाला लाजपतराय, जो कि १९२० के कलकत्ता कांग्रेस अधिवेशन के सभापति थे, जिन्होंने साइमन कमीशन का विरोध किया था, सरदार भगतसिंह, ब्रह्म रामप्रसाद बिस्मिल, खां. श्रद्धानन्द, भाई, परमानन्दादि सभी को देश की आजादी के लिए अपने प्राणों की आहुति देने की प्रेरणा देने वाले महर्षि दयानन्द का नाम न लेने का पाप तथा कथित राजनेता कर रहे है।

इतिहास इन्हें कभी क्षमा नहीं करेगा, दलितोद्धार हो, स्त्रीशिक्षा हो, तथाकथित

जाति प्रथा पर कुठाराघात हो, विशाल हिन्दु समाज पर होने वाले विधर्मियों (ईसाईयों और मुसलमानों) के आरोप हो इन सब की एक चट्टान बनकर इस विशाल समाज और राष्ट्र की रक्षा की उसका नाम न लेने उसके प्रति कृतज्ञता व्यक्त न करना, बहुत बड़ा पाप है। क्या यह सुनियोजित षड्यन्त्र तो नहीं है। आर्य समाज के नेता पदाधिकारी-विद्वान संन्यासी, कुम्भकरण की नींद में सो तो नहीं रहे हैं। कोई इनको स्वकर्तव्य बोध कराएगा या स्वार्थ के वशीभूत सब मौन धारण किए रहेंगे

महर्षि दयानन्द ने लिखा है कि "आर्ष ग्रन्थों का पढ़ना समुद्र में गोता लगाना और बहुमूल्य रत्नों को प्राप्त करना है"। आज योजनाबद्ध तरीको से आर्ष पाठ विधि के गुरुकुलों को समाप्त करने का षड्यन्त्र हो रहा है।

आज प्रान्तीय सरकारें अपने प्रान्त में शिक्षा बोर्ड बनाकर, छात्रों एवं शिक्षकों को आर्थिक लाभ का प्रलोभन देकर आष्टाध्यायी, महाभाष्य निरुका दर्शन वेदादि के परम्परिक पठन-पाठन की प्रक्रिया को समाप्त किया जा रहा है। यदि ऐसा ही कुछ समय तक होता रहा तो, गुरुकुल आर्ष पाठ विधि, वैदिक सिद्धान्त आदि का नाम मात्र शे, रहेगा। इनके सुरक्षित न रहने पर विशाल हिन्दु समाज भी सुरक्षित नहीं रहेगा क्योंकि तथाकथित हिन्दू जाति और राष्ट्रीय स्वाभिमान की सुरक्षा कवच तो आर्य समाज वैदादि आर्ष ग्रन्थ तथा इनको स्पष्ट करने वाले ऋषि दयानन्द है।

इनको योजनावद्ध तरीके से समाप्त करने का गहरा षड्यन्त्र करना बन्द कर दें अन्यथा मानव समाज सुरक्षित नहीं रहेगा जैसा कि लिखा है "धर्म एव हतो हन्ति"।

कसाई और गाय

कसाई गाय काट रहा था
और गाय हंस रही थी...
ये देख के कसाई बोला...
'मैं तुम्हें मार रहा हूँ
और तुम मुझ पर
हंस क्यों रही हो...?'
गाय बोली...
ज़िन्दगी भर मैंने
घास के सिवा कुछ नहीं खाया है
फिर भी मेरी मौत इतनी दर्दनाक,
है तो हे इंसान ! ज़रा सोच
तू मुझे मार के खायेगा तो
तेरा अंत कैसा होगा... ?
दूध पिला कर
मैंने तुमझे बड़ा किया
अपने बछड़े से छीनकर
तुझे दूध दिया
रूखी-सूखी खाती थी
कभी न किसी को सताती थी
कोने में पड़ जाती थी
दूध नहीं दे सकती
गोबर से काम आती थी
मेरे अपलों की आग से तूने
भोजन अपना पकाया
गोबर गैस से रोशन करके
अपने घर को उजला बनाया।
पड़ी रहूँगी इक कोने में
मत कर लालच
माँ हूँ मैं...
कृष्ण की प्यारी हूँ
मत कर बेटा तू यह पाप
रूखी-सूखी खा लूँगी
किसी को नहीं सताऊँगी
तेरे काम आई थी
तेरे काम आऊँगी।
ककरते हैं अगर आप गौमाता से प्यार
थोड़ा बहुत दूध का कर्ज चुकता करें
सबकी एक पुकार
गौ हत्या अब नहीं स्वीकार....!!

'दिव्य दिया सत्यार्थ प्रकाश'

जीवन कितना ऋपि का उज्जवल,
है चरित्र गंगा सा निर्मल,
कीर्ति विकीर्ण दिशाओं में जो -
रजत चांदनी सदृश धवल,
प्रभा-प्रमण्डित कर्म तुम्हारे -
बसुन्धरा पर हैं चविमान।

सोया राष्ट्र जगाने वाले,
वेद छाया लहराने वाले,
सत्य सनातन धर्म वेद का
भू को फिर दिखलाने वाले,
पतितों का उद्धार किया -
स्त्रियों को किया पुनः गतिमान

समस्तों को साहस देकर,
मनुष्यता को निर्भय कर,
जाग्रत किया जगत का सार,
वेदों का विद्या लेकर,
गहन अविद्या अन्धकार से -
ग्रसित, किया भू ज्योतिर्मान।

अनुपमेय का वह व्यक्तित्व,
दिव्य समग्र रहा कृतत्व,
बड़े-बड़े विद्वान पराजित -
हुए तुम्हारा सुन वक्तृत्व,
मानव की सम्पूर्ण प्रगति हित,
किया अलौकिक अनुसंधान।

दिव्य दिया 'सत्यार्थ - प्रकाश,
जाग्रत हुई जन मन आश,
तूफानों से टकराए तुम -
हुए नहीं तुम तनिक निराश,
आर्य समाज किया स्थापित -
जिससे हो जग का कल्याण॥

आर्य समाज के विधान में कायाकल्प

-प्रस्तुतकर्ता- डॉ. ज्वलन्तकुमार शास्त्री
चिन्तन- आचार्य विश्वश्रवाः व्यास वेदाचार्य

(स्वामी दयानन्द सरस्वती ने अपने जीवन काल में तीन संस्थाओं की स्थापना की - १) आर्य समाज, २) परोपकारिणी सभा, ३) गोकष्यादिरक्षिणी सभा। तीनों संस्थाओं के नियम, विधान और कार्य पथक्- पथक् हैं। स्वामी जी ने जिला आर्य उप्रतिनिधिसभा प्रान्तीय तथा सार्वदेशिकप्रतिनिधिसभा की कोई परिकल्पना नहीं की थी। स्वामी श्रद्धानन्द जी, महात्मा नारायण स्वामी आदि आर्य नेताओं द्वारा प्रान्तीय तथा सार्वदेशिक सभाओं का गठन हुआ। आर्य समाज की इकाई-प्रान्तीय तथा सार्वदेशिक सभाओं के संगठन सम्बन्धी समस्याओं पर आर्य समाज के प्राख्यात दिग्गज विद्वान् स्व. आचार्य विश्वश्रवा जी के चिन्तन को हम यहाँ प्रस्तुत कर रहें हैं। आचार्य जी ने अपना यह विचार जीवन के अन्तिम दिनों में मुझे बोलकर लिखवाया था। संगठन सम्बन्धी इस लेख के अतिरिक्त आचार्य जी ने दो लेख और लिखवाये थे। १) महर्षि दयानन्द सरस्वती का सम्पूर्ण कार्यक्रम। २) यज्ञाभिज्ञों की यज्ञविषयक सम्मतियाँ। अब तक ये लेख के अप्रकाशित रह जाने का कारण यह रहा कि ये लेख मेरे पास कागजों के ढेर में रखे गये थे। विगत दो तीनमास से इसी सामग्री को ढूँढने का मैंने प्रयास किया और तीनों लेख मुझे मिल गए। जहाँ तक मैं समझता हूँ - संगठन सम्बन्धी प्रथम लेख में व्यक्त विचार बहुत ही प्रभावी हैं और इन्हें लागू कर देने से आर्य समाज के संगठन सम्बन्धी सभी समस्याओं और विवादों का अन्त हो जाएगा। इस विचार की एक दूसरी विशेषता यह है कि आर्य समाज के वर्त्तमान संगठन में आर्य विद्वानों की भागीदारी नहीं हो पाती। इसके कार्यान्वित होने से हमारे संगठन की यह न्यूनता भी दूर हो जाएगी। वेद का आदेश है -

यत्र ब्रह्म च क्षत्रं च सम्यचौ चरतः सह। तं लोकं पुण्यं यज्ञेषं यत्र देवाः सहाग्निना॥ (यजुर्वेद २०.२५)

अर्थात् किसी भी संगठन, समाज या राष्ट्र के संचालन और रक्षा के लिए ब्रह्मशक्ति तथा क्षात्रशक्ति दोनों का समन्वय आवश्यक है। इस संक्षिप्त भूमिका के बात आचार्य जी का विचार आचार्य जी के ही शब्दों में प्रस्तुत है-

विधान में परिवर्तन आवश्यक-

१) सार्व देशिक सभा, प्रान्तीय सभाओं और आर्य समाजों के विधान में आमूलचूल परिवर्तन आवश्यक है। इस समय सार्वदेशिक हैं। समस्त आर्यजगत् का उसमें कोई हाथ नहीं होता। सार्वदेशिकसभा का निर्वाचन प्रान्तों से आये हुए प्रतिनिधियों द्वारा होता है, अतः जो व्यक्ति सार्वदेशिक सभा में बैठे हुए होते हैं वे प्रान्तों के निर्वाचन में दखल देते हैं और इस बात का यत्न करते हैं कि उन प्रान्तों से वे ही प्रतिनिधि आवें जो हमें चुनें। अब तक का पिछला इतिहास यह रहा है कि यदि किसी प्रान्त में ऐसे व्यक्तियों का बहुमत हो गया जो सार्वदेशिक में बैठे हुए व्यक्तियों के अनुकूल नहीं है तो सार्वदेशिकसभा के व्यक्तियों ने उस प्रान्त में नकली प्रान्तीय सभा बनकर उससे प्रतिनिधि लेकर सार्वदेशिक में अपना निर्वाचन करा लिया। यह बात यहाँ तक बढ़ी कि यदि किसी प्रान्तीय सभा का निर्वाचन रजिस्ट्रार ऑफ सोसायटी ने कराया है तो भी उसके भंग करके सार्वदेशिक में बैठे हुये व्यक्ति ने अपने अनुकूल हारे हुए व्यक्तियों की तदर्थ समिति बनाकर उस प्रान्त का अधिकारी बना दिया। उस प्रान्त का बहुमत और रजिस्ट्रार ऑफ सोसायटी कुछ नहीं कर सके। ऐसी घटना उत्तर प्रदेश, पंजाब और बिहार आदि कई प्रान्तों में हो चुकी है। इस प्रकार सार्वदेशिक सभा ही इस विधान के अनुसार प्रान्तों में हो चुकी है। इस प्रकार सार्वदेशिक सभा ही इस विधान के अनुसार प्रान्तों में झगड़े कराती है और अपने प्रतिकूल उस प्रान्त के व्यक्तियों को सदा के लिए निष्कासित कर देती है जिससे वे जीवनभर प्रतिनिधि बनकर ही न आ सकें, यद्यपि वे व्यक्ति सभाओं के प्रधानादि पद पर रहकर काम करते रहे थे, किन्तु आज वे सभासद् भी नहीं हो सकते। इस प्रकार सार्वदेशिकसभा की निर्वाचन प्रणाली सत्यन्त ही दूषित तथा त्रुटिपूर्ण है।

२) प्रान्तीय सभाओं का निर्वाचन भी समाजों से आये हुये प्रतिनिधियों के द्वारा होता है, अतः प्रान्तीय सभाओं में बैठे हुए अधिकारी उन समाजों में झगडा कराते हैं। जिन समाजों के प्रतिनिधि उनके अनुकूल नहीं होते, और उस समाज के संगठन को भंग करके प्रशासक नियुक्त कर देते हैं। इस प्रकार वर्तमान विधान के अनुसार प्रान्तीय सभायें अपने प्रान्त की आर्यसमाजों में विद्वेष फैलाती हैं।

३) आर्य समाजों का विधान भी त्रुटिपूर्ण है। आर्य समाजों में कुछ व्यक्ति ही मेम्बर (सदस्य) बने रहते हैं और उस शहर के अन्य आर्य समाजियों को मेम्बर ही नही बनाते, जिससे कि उनके हाँथ से 'स्थानी आर्य समाज' ही न निकल जाये। इस प्रकार आर्य समाजों की पार्टीबाजी में प्रान्तीय सभा सहयोग देती है और प्रान्तीय सभा की पार्टीवाजी में सार्वदेशिक सभा। प्रान्तीय सभा तथा आर्य समाजों का विधान अमूलचूल परिवर्त्तन के योग्य है। इस विधान ने आर्य समाज के संगठन को जर्जरित कर दिया है। देश-विदेश समस्त आर्यजगत् में इस समय गहयुद्ध हो रहा है। यादवों के यहयुद्ध में सब मारे गये, केवल ४ चार व्यक्ति मरने से वचे-१) श्रीकृष्ण, २) बलराम, ३) सात्यकि, ४) उद्धव। इसी प्रकार आर्य समाज का विवाद, ये चार बकार बचेंगें। (श्लेश अलंकार में बवयोरभेद; होता है।) अतः महर्षि दयानन्द के मिशन

के सच्चे हितैषियों को इस विषय पर गम्भीरता से विचार करना चाहिए। हम सार्वदेशिक सभा, प्रान्तीय सभा तथा आर्य समाज का एक विधान प्रस्तुत करते हैं जिससे उपर्युक्त परिस्थितियाँ पैदा नहीं हो सकेंगी। वह विधान इस प्रकार है।

सार्वदेशिक सभा के निर्वाचन का प्रकार- एक आर्य महासम्मेलन प्रतिवर्ष या ततीयवर्ष हो, जिसमें समस्त आर्यसमाजों के साधारण सदस्य अर्थात् भारत के सभी आर्य समाजों तथा विदेशों के भी सभी आर्य समाजों के साधारण सदस्य अर्थात् भारत के सभी आर्य समाजों तथा विदेशों के भी सभी आर्य समाजों के साधारण सदस्य उसमें भाग लें। इन सभी सदस्यों को मत देने का अधिकार हो, केवल आर्य सभासदों का ही नहीं। इस सम्मेलन में सार्वदेशिक सभा के प्रधान, मन्त्री, कोषाध्यक्ष और धर्माधिकारी का निर्वाचन बहुमत से हो क्योंकि सार्वदेशिक सभा समस्त संसार के आर्यजगत् की शिरोमणि सभा है अतः इसके निर्वाचन में समस्त आर्य जगत् को भाग लेने का अधिकार होना चाहिए। इन चारों व्यक्तियों (प्रधान, मन्त्री, कोषाध्यक्ष और धर्माधिकारी) के लिए यह बन्धन नहीं होना चाहिए कि ये आर्य समाज के सदस्य हों। क्योंकि आर्यजगत् में ऐसे गणमान्य अनेक व्यक्ति पिछले इतिहास में हो चुके हैं जो किसी आर्य समाज के सदस्य नहीं थे। जैसे- पं. ब्रह्मदत्त जिज्ञासु, पं. सिवसंकर शर्मा काव्यतीर्थ, महामहोपाध्याय आर्यमुनि, पं. गणपति शर्मा इत्यादि। इस समय भी सर्वोच्च संन्यासी स्वामी सर्वानन्द जी महाराज तथा प्रमुख विद्वान् पं. युधिष्ठिर मीमांसक किसी आर्य समाज के सदस्य नहीं है। (आचार्य जी द्वारा यह लेख लिखवाते समय ये दोनों महानुभाव जीवित थे। दुःख है कि स्वयं आचार्य जी तथा स्वामी जी और पण्डित मीमांसक अब नहीं रहे।) परन्तु यह आवश्यक होगा कि निर्वाचन के समय या नामांकन पत्र दाखिल करने के समय उनके हस्ताक्षर आर्य समाज के सदस्यता पर तथा सार्वदेशिक सभा के प्रतिज्ञाफार्म पर करा लिया जाएँ। नामांकन पत्र दाखिल करने का समय निर्वाचन के दो माह पूर्व होगा, और प्रस्तावक तथा अनुमोदक उसके पक्ष में एक हजार (१००० रू.) या एक सौ डाल सर्वदेशिक सभा में जमा करेगा। इनचारों के निर्वाचित हो जाने पर कोषाध्यक्ष अपना सहायक कोपाध्यक्ष स्वयं चुने। धर्माधिकारी पुस्तकाध्यक्ष एवं सहायक पुस्तकाध्यक्ष चुन लेगा। इसके पश्चात् वर्तमान विधान के अनुसार सब प्रान्तों तथा विदेशों के प्रतिनिधि अलग-अलग अपना-अपना ग्रुप बनाकर बैठेगें। जिन प्रान्तों में दो हजार आर्य समाज है, वे प्रान्त अपनी ओर से दो उपप्रधान, दो उपमन्त्री तथा दो अन्तरंग सदस्य सार्वदेशिक सभा के लिए चुनकर देंगे। जिन प्रान्तों में एक हजार आर्य समाजें हैं, वे एक उपप्रधान, एक उपमन्त्री तथा एक अन्तरंग सदस्य चुनकर सार्वदेशिक सभा के लिए देंगे। विदेशों के आर्य समाजों को वर्तमान विधान के अनुसार यह अधिकार होगा कि वे प्रतिनिधि भारत में स्थित किसी को अन्तरंग सभा के लिए दे दें या अन्तरंगसभा के लिए स्वयं प्रस्तुत करें। इस प्रकार सार्वदेशिक सभा के पूर्ण निर्वाचन होने के पश्चात 'पहली अन्तरंग सभा' में धर्माधिकारी को होगा। सार्वदेशिक सभा के अधिकारी अपने सुझाव धर्माधिकारी को दे दंगे, परन्तु अन्तिम निर्णय धर्माधिकारी का होगा जो यह तय करेगा कि किन-किन कामों का बजट बनाया जाए। सब धन बैंको में ही जमा होगा। बैंकों से धन को निकालने के लिए धमाधिकारी तथा प्रधान, मन्त्री, कोषाध्यक्ष में से कोई एक के सम्मिलित हस्ताक्षर अवश्य होंगे। अधिकारी लोग धन का व्यय अन्तरंग सभा के अनुसार धर्माधिकारी द्वारा प्रस्तुत कार्यों के सम्पन्न करने में करेंगे।

२) प्रान्तीय सभा का निर्वाचन- प्रान्तीय सभा का निर्वाचन प्रत्येक वर्ष या ततीय वर्ष में प्रान्तीय आर्य सम्मेलन में होगा, जिनमें प्रान्तभर के सभा आर्य समाजों के सब साधारण सदस्य (केवल आर्य सभासद् ही नहीं) भाग लेंगे, जिसमें प्रधान, मन्त्री, कोषाध्यक्ष सहायक कोषाध्यक्ष को चुनेगा और आचार्य पुस्तकाध्यक्ष तथा सहायक पुस्तकाध्यक्ष को चुनेगा। आचार्य ही प्रान्तीय सभा का बजट बनायेगा, जिसको अन्तरंग सभा को पास करना होगा। सब रूपया बैंक में जमा रहेगा। आचार्य के हस्ताक्षर और प्रधान, मन्त्री व कोषाध्यक्ष में से किसी एक के हस्ताक्षर से ही रूपया बैंक से निकलेगा। आचार्य के बनाये हुये बजट को प्रान्तीय सभा के अधिकारी अन्तरंग के आदेश के अनुसार कार्यरूप में परिणत करेंगे। अधिकारियों के निर्वाचन होने के पश्चात् जिन कमिश्नरियों में आर्य समाजों की संख्या...इतनी हो, उन्हें, एक उपप्रधान, एक उपमन्त्री और एक अन्तरंग सदस्य अपनी ओर से देने होंगे और जिनम कमिश्नरियों में आर्य समाजों की संख्या...इतनी हों, वे कमिश्नरियाँ केवल एक अन्तरंग सदस्य को चुनकर प्रान्तीय सभा के अन्तरंग को देंगी। (यहाँ रिक्त स्थानों पर आचार्य जी कोई संख्या का निश्चित निर्धारण नहीं कर पाये थे, उनका विचार था कि संख्या का निर्धारण अधिकारी मिलकर सर्वसम्मति से या बहुमत से कर सकते हैं- प्रस्तुतकर्त्ता) अथवा प्रत्येक जिला अपनी ओर से एक अन्तरंग सदस्य चुनकर प्रान्तीयसभा के अन्तरंग में भेजेगा। (वैकल्पिक व्यवस्था में आचार्य जी सर्वसम्मति चाहते थे, बहुमत के आधार पर नहीं क्योंकि ऐसी स्थिति में जनपदीय अधिकारियों का उत्साह (आर्य समाजों की इकाइयाँ बढ़ाने में न्यून हो सकता है-प्रस्तुतकर्त्ता) यदि आचार्य के बनाये हुये बजट को प्रान्तीयसभा के अधिकारी या अन्तरंगसभा कार्य रूप में परिणत न करे तो आचार्य को अधिकार होगा कि वे अधिकारियों तथा अन्तरंग को भंग करके दुबारा 'आर्य सम्मेलन' बुलावे, जिसमें आचार्य सहित सभी अधिकारियों का चुनाव दुबारा करना होगा।

३) आर्य समाजों का निर्वाचन- इस समय जो समाजें हैं वे सभी पहली बार अपना एक पुरोहित (यहाँ 'पुरोहित' से तात्पर्य समाज द्वारा नियुक्त वैतनिक पुरोहित से नहीं है, अपितु इकाई आर्य समाज के सभी सदस्यों द्वारा सर्वसम्मति या बहुमत से अपने बीच सबसे ज्येष्ठ आर्य विचारधारा का ज्ञानवान् और आचारवान् आर्य सभासद् से

है । (वैसे इकाई आर्य समाज सर्व सम्मति या बहुमत से यदि चाहें तो वैतनिक या अवैतनिक पुरोहित को भी चुन सकती हैं- प्रस्तुतकर्त्ता) सर्वसम्मति या बहुमत से स्वयं चुनेंगे । इसके पश्चात् उस आर्य समाज में नया सदस्यबनाने का अधिकार पुरोहित का होगा । पुरोहित बजट प्रस्तुत करेगा, उसे कार्यरूप में परिणत अधिकारी तथा अन्तरंग के सदस्य करेंगे । रूपया बैंक में जमा होगा । पुरोहित तथा प्रधान, मन्त्री, कोषाध्यक्ष में से किसी एक के सम्मिलित हस्ताक्षर से बैंक से रूपया निकलेगा । (यहाँ इकाई आर्य समाज के पदाधिकारियों प्रधान, उपप्रधान, मन्त्री, कोपाध्यक्ष, पुस्तकाध्यक्ष तथा प्रचारमंत्री और अन्ततरंग सभा) के निर्वाचन का उल्लेख आचार्य जी के लेख में नहीं मिलता । प्रतीत होता कि इकाई आर्य समाज के पदाधिकारियों का निर्वाचन भी पुरोहित की देखरेख में पूर्वोक्त सार्वदेशिक तथा प्रान्तीयसभा के पदाधिकारियों की भाँति ही निर्वाचन आचार्य जी को अभीष्ट था-प्रस्तुतकर्त्ता) यदि अधिकारी या अन्तरंग सभा पुरोहित के बजट को कार्यरूप में परिणत न करे तो पुरोहित को अधिकार होगा कि उन अधिकारियों तथा अन्तरंग सभा को भंग करके नये अधिकारी तथा अन्तरंग सभा का चुनाव करे । इस भंग किये हुए अधिकारियों तथा अन्तरंग के सदस्यों में, से किसी का दुबारा भी चुनाव पुरोहित कर सकता है । यदि उस आर्य समाज के अन्तरंग को पुरोहित के विरुद्ध कोई अभियोग होगा तो प्रान्त के सभी पुरोहितों की सभा में, जिसकी अध्यक्षता या सभापतित्व प्रान्तीय सभा का आचार्य करेगा, उसमें उस पुरोहित-सभा के निर्णय के अनुसार उस अभियुक्त पुरोहित का स्थानान्तरण किया जा सकता है या उसे पथक् किया जा सकता है । यदि वह अभियोग ही पूर्णतः असत्य हो तो उस पुरोहित को उसी आर्य समाज में पुनः नियुक्त किया जा सकता है । पुनः नियुक्ति की स्थिति में अन्तरंग सभा भंग हो जाएगी, जिसने अभियोग लगाया था । तब पुनः नियुक्त पुरोहित उस आर्य समाज का पुनर्निवाचन करेगा । इसी प्रकार प्रान्तीय आचार्य के विरुद्ध प्रान्तीय अन्तरंग की शिकायत किये जाने पर समस्त प्रान्तीय आचार्यों की सभा बुलाई जाएगी, जिसका सभापतित्व धर्माधिकारी करेगा । उसके निर्णय के अनुसार उस आचार्य को स्थानान्तरित, पथक् या पुनर्नियुक्त किया जा सकता है । पुनर्नियुक्ति की स्थिति में उस आचार्य को यह अधिकार होगा कि प्रान्तीय सभा के वर्तमान अधिकारियों को भंग करके अधिकारियों का दुबारा निर्वाचन कर दे । ऐसी स्थिति में अन्तरंग सभा का निर्वाचन पूर्वोक्त विधान के अनुसार मण्डल (कमिश्नरियों) या जनपद (जिलें) फिर से करेंगे । परन्तु धर्माधिकारी के विरुद्ध सार्वदेशिक के अन्तरंग द्वारा अभियोग लगाये जाने पर उस धर्माधिकारी के सम्बन्ध में विचार नैमित्तिक आर्य महासम्मेलन में ही होगा । नैमित्तिक आर्य सम्ममेलन बुलाने का निर्णय सब प्रान्तीय सभाओं तथा विदेशों के प्रधानों के बहुमत से होगा । आर्य समाजों, प्रान्तीय सभां तथा सार्वदेशिक सभा के अन्तरंग का अधिवेशन बुलाने आदि का प्रकार वर्तमान विधान के अनुसार ही रहेगा । किन्तु उपर्युक्त नये विधान के अनुसार अपेक्षित परिवर्त्तन कर दिया जायेगा ।

इस समय प्रान्तीय सभाओं का विधान प्रान्तीय सभाओं ने स्वयं बनाया है, सार्वदेशिक सभा ने नहीं बनाया है । अतः सभी प्रान्तीय सभायें इस नये विधान से सहमत हों वे अपने यहाँ इसे लागू कर दें । यद्यपि आर्य समाजों का विधान सार्वदेशिक सभा द्वारा अब बनाया जाता है, परन्तु आर्य समाजों का विधान महर्षि दयानन्द सरस्वती ने बनाया था और उसमें महर्षि ने यह लिखा था कि प्रत्येकवर्ष इस विधान में आवश्यकतानुसार संशोधन करें । आर्य समाज का संगठन नीचे से ऊपर की ओर है अर्थात् आर्य समाजों से प्रान्तीय सभा और प्रान्तीय सभा से सार्वदेशिक सभा। ऊपर से नीचे को नहीं अर्थात् सार्वदेशिक से प्रान्तीय और प्रान्तीय से आर्य समाजें नहीं । (जैसा कि इस समय कांग्रेस, सपा, वसपा, तथा रालोद की राजनीतिक पार्टियों में सोनिया गाँधी, मुलायम सिंह, मायावती, अजित सिंह तथा ओमप्रकाश चौटाला की पार्टियों का हाल है । नीचे से ऊपर की ओर संगठन का ढाँचा अधिकांश में वामपंथियों तथा न्यूनांश में भाजपाइयों का है।- प्रस्तुतकर्त्ता)

इस परिप्रेक्ष्य में इकाई आर्य समाजें अधिक से अधिक संख्या में इस नये विधान को लागू कर दें, जिससें प्रान्तीयसभा तथा सार्वदेशिक सभा पर दबाव पड़े । परस्पर शान्त वातावरण में प्रेमपूर्वक सभा आर्य जगत् सार्वदेशिक सभा में इस विधान को स्वीकार करावें, ऐसी मेरी विनम्र प्रार्थना है ।

नोट-१) इसको मुद्रित-प्रकाशित कराकर प्रत्येक आर्य, आर्य समाज, आर्य नेताओं तथा आर्य पत्रों तक पहुँचाने का सभी को अधिकार दिया जाता है । २) इस विधान में भी आ'स्यकतानुसार परिवर्त्तन किया जा सकता है । ३) फिलहाल इस विधान के समर्थन, संशोधन या खण्डन अथवा विचार विमर्श या खुली बहस के लिए सबको निमन्त्रण देता हूँ। खण्डन की स्थिति में सार्वदेशिक, प्रान्तीय तथा स्थानीय आर्य समाज की त्रुटिपूर्ण या दूषित वर्तमान स्थिति को दूर करने का कोई अन्य कारगर (प्रभावी) उपाय भी सुझाना चाहिए ।

हारना आवश्यक हो जाता है

हरिवंशराय बच्चन

हारना तब आवश्यक हो जाता है
जब लड़ाई अपनों से हो !
और जीतना तब आवश्यक हो जाता है
जब लड़ाई अपने आप से हो ! !
मंजिले मिले, ये तो मुकद्दर की बात है
हम कोशिश ही न करे ये तो
गलत बात है
किसी ने बर्फ से पूछा कि,
आप इतने ठंडे क्यूं हो ?
बर्फ ने बडा अच्छा जवाव दिया
मेरा अतीत भी पानी मे
मेरा भविष्य भी पानी मे
फिर गरमी किस बात पे रखू?

आर्य समाज अतीत, वर्त्तमान एवं भविष्य

वेदाचार्य डॉ. रघुवीर वेदालंकार

जगन्नाथ जी का रथ चल रहा है । पता नहीं कब से, आगे भी चलता ही रहेगा । इसे खींचने वाले बदलते रहते हैं, किन्तु रथ की गति न घटती है, न बढ़ती है । यह तो पुरि (उड़ीसा) में होता है । आर्य समाज का रथ भी चल रहा है, किन्तु लगभग सवा सौ साल में ही इसकी गति में परिवर्त्तन हो गया । पहले यह रथ घर्घट ध्वनि के साथ दौड़ रहा था, तेजी से भाग रहा था, क्योंकि इसे खींचने वाले ऋषि के भक्त थे । उनमें उत्साह था, लगन थी, जोश था तथा जज्बा था इस रथ को विश्व भर में घुमाने का । उन्होंने ऐसा किया भी क्योंकि वे त्यागी थे, तपस्वी थे, आर्य थे, निःस्वार्थ थे । लोगों ने इस दिव्य रथ को देखा, इसकी आवाज को सुना तथा इसमें सवार भी हुे, किन्तु यह क्या हुआ कि इन्हीं लोगों की अगली पीढियाँ इस रथ से कूद-कूद कर भागने लगी, जिनके विषय में हम या उनकी सन्तान केवल यही कह कर सन्तोष कर लेते हैं कि इनके दादा-परदादा आर्य समाजी थे । यह आर्य समाज का अतीत है । यह उन कर्त्तव्यनिष्ट ऋषिभक्त नेताओं तथा विद्वानों संन्यासियों के कारण था, जो कि इस रथ को खींच रहे थे ।

डॉ. हरिवंशराय बच्चन इलाहाबात के बाजार में खड़े होकर सत्यार्थप्रकाश बेचते थे । वे आर्य कुमार सभा के सदस्य भी थे । उनके पुत्र अभिताभ का आर्य समाज से सम्बन्ध ? हमारे कालेज में हमारे ही विभाग में दो प्राध्यापकों के दादा जी पक्के आर्य समाजी थे । आज उनमें से एक तो रा.स्व.से. संघ में चले गये, दूसरे का झुकान जैनमत की ओर हो गया । ऐसे अनेक उदाहरण हैं, प्रश्न है ऐसा क्यों हुआ ? दिल्ली वि. वि. के एक कट्टर आर्य समाजी संस्कृत विभागाध्यक्ष का पुत्र रजनीश का भक्त बन गया । ये सब शिक्षित लोग हैं । पुनरपि ऐसा क्यों हुआ तथा हो रहा है ? कारण है हमारी अकर्मण्यता तथा निष्ठा का आभाव । जब हम अपने सन्तानों को भी आर्य नहीं बना सके तो **'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्'** घोष व्यर्थ ही है । इसका कारण सुस्पष्ट है कि पक्के आर्य भी नेता भी विद्वान् भी अपने बच्चों में जन्म से ही आर्यत्व तथा आर्य समाज के संस्कार नही डालते । सिख भाई बच्चों सहित गुरुद्वारे में जाते हैं । मुस्लिम घरों में बच्चो को कुरान अनिवार्य रूप में पढाई जाती है । मदरसों में भी उन्हें मजहबी तालीम दी जाती है, जबकि हमारे यहाँ यह कार्य न तो परिवारों में होता है तथा न ही शिक्षणालयों में । तो आर्यों की संख्या घटेगी या बढेगीं ? ऐसा नहीं कि सर्वत्र ऐसा ही है । अनेक परिवार परम्परा से आर्य समाजी है । दिल्ली में कई परिवार हैं । पं. गंगा प्रसाद जी उपाध्याय के पुत्र डॉ. स्वामी सत्यप्रकाश जी वो पिता से भी आगे बढ गये । ऐसे उदाहारण स्वल्प हैं । चिन्ता बाहुल्य को देखकर होती है ।

पीछे मैंने अतीत में आर्य समाज के रथ को खींचने वाले त्यागी, निःस्वार्थ ऋषि भक्त दढ़ आर्यों का उल्लेख किया । रथ को आज भी खींचा जा रहा है, किन्तु इसकी गति मन्द हो गयी । कभी तो भ्रम होता है कि यह चल भी रहा है या खड़ा ही है । इसका कारण यही है कि आज इसके खींघने वालों में स्वार्थ, पदलिप्सा धन लोलुपता तथा नाम प्रतिष्ठा की भावना भर गयी है । ऐसे व्यक्ति जो स्वयं अपने जीवन को भी नहीं खींच सकते, इसे खींचना चाहते हैं । जब मुंशीराम को बोध हुआ तभी शराब की बोतले भी तोड़ दी तथा मांस का कटोरा भी दीवार पर दे मारा तभी तो स्वामी श्रद्धानन्द बने किन्तु आज मद्यप, आचारहीन व्यक्ति भी कहीं- कहीं सभाओं के पदों पर प्रतिष्ठित हैं । दल बन्दी के कारण अच्छे व्यक्ति भी उनकी सहायता लेते हैं । क्या यह लज्जा की बात नही ? अतीत में नेतागण सेवा के लिए समाज में आते थे, किन्तु आज अपनी पद-प्रतिष्ठा, स्वार्थ-सिद्धि के लिए आते हैं । मुझे स्मरण है कि कुछ सम्भ्रान्त शिक्षित व्यक्तियों ने एक नयी कालोनि में आर्य समाज स्थापना का निश्चय किया । मैं भी उनमें एक था । उनमें एक चतुर व्यक्ति जो उस समय आर्य समाज हनुमान रोड़ का मार्ग भी नही जानता था, सोद्देश्य इसमें सम्मिलित हुआ । एक दिन मैंने उन्हें कह भी दिया था कि आपका उद्देश्य समाज की स्थापना है या समाज है या समाज के माध्यम से अपनी स्वार्थ सिद्धि । वह की गयी । वही व्यक्ति बाद में हनुमान रोड़ की सभा का मन्त्री, प्रधान तथा एक उच्च शिक्षा संस्था का सर्वोच्च अधिकारी बना । मैं जहाँ का तहाँ हूँ । प्रसन्न हूँ, सन्तुष्ट हूँ किन्तु वह व्यक्ति टूट गया जब उसे वह संस्था छोड़नी पड़ी । यह अकेला उदाहरण नही है । ९० प्रतिशत का यही डाल है, सब जानते हैं । यह आर्य समाज का वर्त्तमान है ।

आज हमारी आस्था न सत्य में है, न सिद्धान्तों में तथा नही दयानन्द में । आस्था है तो अपने पद-प्रतिष्ठा तथा स्वार्थ में । यही कारण है कि अनेक वर्षों तक किसी पद पर एक ही अधिकारी बना रहता है । इसके लिए जोड-तोड तालों में निर्वचन कराना, सभाओं को भंग करना नयी सभा बनाना, विरोधियों की वोट काटना जैसे कुत्सित कार्य भी किये जाते हैं । फिर भी हम आर्य हैं नेता हैं तो अनार्य कौन होगा ? प्रधानत्व छोड़ने पर भी संरक्षक का पद समाज में बना दिया गया है, जबकि महर्षि दयानन्द ने इसे स्वीकार नही किया था, आज उसी निःस्पह ऋषि के शिष्य समाजों के संरक्षक बन बैठे । सिद्धान्तहीन इतने कि एक समाज के दिवंगत प्रधान जी ने मुझे स्वयं सुनाया कि उन्होंने जहाँ अपनी पुत्री का विवाह करना चाहा, वहाँ लड़के वाले ने स्पष्ट कहा कि बाराती मुर्गा खायेंगे । प्रधान जी हँसकर बतला रहे थे कि हमने वह शर्त मानली क्योंकि बेटे वाला बड़ा आदमी था । इन्हीं प्रधान जी का एकमात्र पुत्र शराबी है । क्या समाज का उद्धार ऐसे ही अधिकारियों से होगा ? आस्था हीनता का अन्य उदाहरण है कि आज बहुत से आर्य समाजियों के घरों में मूर्त्तिपूजा होती है । हमारी निर्वाचन प्रणाली तथा सदस्यता का अनुचित लाभ उठाकर आर्य सिद्धान्त विरोधी अनेक व्यक्ति आर्य समाजों में घुस गये हैं जिनका उद्देश्य समाज के काम को धीमा या समाप्त करना तथा दयानन्द के स्थान पर विवेकानन्द को स्थापित करना है ।

अतीत में हमारी आर्यकुमार सभाएँ, आर्यवीरदल अतिसक्रिय तथा सशक्त संगठन थे। अनेक दिवंगत प्रभावशाली व्यक्ति अतीत में आर्यकुमार सभा तथा आर्य समाज के अंग रहे। यथा- प्रधानमन्त्री चन्द्रशेखर, उपराष्ट्रपति- कृष्णकान्त, भा.ज.पा. के उद्धारक कृष्णलाल शर्मा, लाल बहादुर शास्त्री, बाबू जगजीवनराम इत्यादि। बाद में ये आर्य समाज से कट गये। बाजपेयी जी तो विधिवत् आर्य कुमार सभा के सदस्य थे। एक अपवाद चौ. चरणसिंह का है जो आजन्म खुले रूप में आर्य समाजी रहे किन्तु उनका पुत्र अजीत सिंह भी हमसे दूर हो गया। इस दुरवस्था का क्या कारण तथा क्या निकारणोपाय हैं, क्या कभी हमने सोचा ?

इसका कारण यह है कि आज हमारे क्रिया कलाप साप्ताहिक सत्संग वार्षिकोत्सव, वेद कथाओं तथा सम्मेलनों तक सीमित हो गये। बाह्य सामाजिक धार्मिक तथा राजनीतिक परिवर्तनों से हम विचलित नहीं होते। न ही उनके विरोध में मुहँ खोलते। ऐसे केवल यज्ञ-सत्संग प्रेमी आर्य समाज की ओर कौन चलेगा ? विशेषतः युवावर्ग की रूचि तो इसमें होगी ही नहीं। परम्परा तथा विरासत को युवा ही आगे बढ़ा सकते है। साप्ताहिक सत्संग में जाने वाले ४-५ शक्ति हीन व्यक्ति नहीं। अतीत में आर्य समाज की कार्य शैली बहुआयामी थी। उसमें बहुमुखी क्रान्ति का शंखनाद था। आज वह नाद **'द्यौः शान्तिरन्तरिक्षं शान्तिः'** में बदल गया। आर्य समाज इतना वर्चस्वी था, कि अंग्रेज सरकार के दबाने से भी न दबा। न्यायालयों में अभियोगों में विजयी रहा। जनता के विरोध तथा तिरस्कार के बाबजूद यह फैला। दूर देशों तक फैला। दगदाद के आर्य समाज ने सार्वदेशिक सभा को एक हजार रूपया दिया था। आज यह स्वयं अपने देश में, अपने घर में ही सिमिट गया, सिकुड़ गया। क्या कारण है ? सिद्धान्त तो वे ही हैं। कहीं न कहीं हमारी कार्यशैली या जीवन शैली में अन्तर है। इसे परखना चाहिए

ऐसी बात नहीं है आर्य समाज तथा आर्य सस्थाओं में सर्वत्र ही शैथिल्य तथा न्यूनताएँ है भारत के विभिन्न प्रदेशों की कई सभाएँ तथा समाज भी अच्छा कार्य कर रहे हैं तथापि यह स्थिति सार्वत्रिक नहीं है। आर्य समाज के संगठन को सुदढ़ तथा एकीकृत होना चाहिए। आज सर्वोच्च सभा की शोचनीय स्थिति से भी पर्याप्त खराबियां उत्पन्न हो गयी हैं।

एक सबसे बड़ी कमी जो कि सम्पूर्ण आर्य समाज में व्याप्त है, आर्यसमाज का राजनीति से पराङ्मुख होना है। स्वाधीनता संग्राम में सर्वाधिक योगदान देकर भी राजनीति में हमने अपनी पकड़ नही रखी। उसे सर्प के समान दूर फेंक दिया। महर्षि दयानन्द ने दूरदृष्टि से अपने ग्रन्थों में राजनीति का चित्रण तथा चक्रवर्ती साम्राज्य की कामना की है। उन्होंने राजाओं को शिष्य बनाया वे सांस्कृतिक, सामाजिक तथा धार्मिक सुधारक के साथ-साथ राजनीतिक योद्धा भी थे। ध्यान रहे कि राज्य ही धर्म प्रचार का साधन है। आज देश में सर्वत्र भ्रष्टाचार व्याप्त है। सभी पार्टियाँ भी इससे ग्रस्त हैं। अतः ब्रष्टाचार का मिटना असम्भव सा ही है। राजदण्ड के बिना भ्रष्टाचार तथा भ्रष्टाचारियों को समाप्त किया ही नहीं जा सकता। आचार्य चाणक्य ने लिखा है- **'सर्वे धर्मा राजदर्मणि पर्यवस्यन्ते'** यदि आर्य समाज का कोई स्वच्छ राजनीति संगठन होता तो क्या जनता उसे स्वीकार न करती ?

आज गांधी जी तथा कांग्रेस को स्वतन्त्रा का श्रेय दिया जाता है, आर्य समाज विस्मत हो गया। प्रसिद्ध वामपन्थी नेता एन.एन.राय लिखते है, कि यदि आर्य समाज अपनी नीति पर दढ़ रहता तो स्वराज्य प्राप्ति का श्रेय कांग्रेस की अपेक्षा आर्य समाज को मिलता। १९०७ में तो कांग्रेस की कुछ भी स्थिति न थी। तब आर्य समाज ही सभी देशोपकारक कार्यों को करने वाली संस्था थी। अंग्रेजों ने यत्नपूर्वक आर्य समाज को राजनीति से अलग किया। राज्य सत्ता से ही राष्ट्र को दिशा मिलती है, केवल यज्ञ तथा हाल में बैठकर सत्संग कर लेने से नहीं। यदि आर्य समाज का वर्चस्व स्थापित करना है तो इसका सर्वोच्च संगठन, सभा सुदढ़ तथा प्रभावी होना चाहिए जिसकी पैठ राजनीति में भी हो। सामाजिक तथा राष्ट्रीय विषयों पर आर्य समाज की सशक्त आवाज उठनी चाहिए आन्दोलन होने चाहिए। आर्यजन परम्परा से अपने बच्चों को आर्य तथा आर्य समाजी बनाएँ। इसके अभाव में हमारी संस्था निरन्तर घटेगी। बड़े-बड़े सम्मेलनों के प्रदर्शन के स्थान पर ईसाईयों तथा मुसलमानों की तरह चुपचाप प्रचार तथा शुद्धि कारण करना चाहिए। हाँ पाखण्ड खण्डन के लिए खुले शास्त्रार्थ आदि किये जाएँ। ये सभी कार्य अब नही हो रहे हैं।

स्वामी दयानंद सरस्वती क्या और कैसे थे...

महर्षि दयानंद के बारे मे अन्य महानुभबों के विचार '

१. "स्वराज्य और स्वदेशी का सर्वप्रथम मन्त्र प्रदान करने वाले जाज्वल्यमान नक्षत्र थे दयानंद ।
लोक मान्य तिलक

२."आधुनिक भारत के आद्दिनर्मता तो दयानंद ही थे द्य महर्षि दयानन्द सरस्वती उन महापुरूषो मे से थे जिन्होनें स्वराज्य की प्रथम घोषणा करते हुए, आधुनिक भारत का निर्माणकिया । हिन्दू समाज का उद्धार करने में आर्यसमाज का बहुत बड़ा हाथ है।
– नेता जी सुभाष चन्द्र बोस

३. "सत्य को अपना ध्येय बनाये और महर्षि दयानंद को अपना आदर्श – **स्वामी श्रद्धानंद**

४. "महर्षि दयानंद इतनी बड़ी हस्ती हैं के मैं उनके पाँवके जूते के फीते बाधने लायक भी नहीं "
– ए .ओ.ह्यूम

५. "स्वामी जी ऐसे विद्वान और श्रेष्ठ व्यक्ति थे, जिनका अन्य मतावलम्बी भी सम्मान करते थे।"
– सर सैयद अहमद खां

६. "आदि शङ्कराचार्य के बाद बुराई पर सबसे निर्भीक प्रहारक थे दयानंद "
– मदाम ब्लेवेट्स्की

७. "ऋषि दयानन्द का प्रादुर्भाव लोगों को कारागार से मुक्त कराने और जाति बन्धन तोड़ने के लिए हुआ था। उनका आदर्श है-आर्यावर्त ! उठ, जाग, आगे बढ़ समय आ गया है, नये युग में प्रवेश कर।"
– फ्रेञ्च लेखक रिचर्ड

८. "गान्धी जी राष्ट्र-पिता हैं, पर स्वामी दयानन्द राष्ट्र पितामह हैं।"– **पट्टाभि सीतारमैया**

९. "भारत की स्वतन्त्रता की नींव वास्तव में स्वामी दयानन्द ने डाली थी।"– **सरदार पटेल**

१०. "स्वामी दयानन्द पहले व्यक्ति थे, जिन्होंने आर्यावर्त (भारत)आर्यावर्तीयों (भारतीयों) के लिए की घोषणा की।" **–एनी बेसेन्ट**

पुनर्जन्म

१) आवागमन क्यों मानना चाहिए ?

इसलिए कि संसार में कोई भी वस्तु नहीं जो एक बार हो कर समाप्त हो जावे किन्तु प्रत्येक वस्तु बार बार होती रहती है फिर मनुष्य का जन्म क्यों एक बार होकर समाप्त हो जावे।

इसलिए कि आत्मा अनादि और अनन्त है, इसलिए उसके लिए आवश्यक है कि बार बार जन्म लेवे।

इसलिए कि पाप और पुण्य को समस्या का यह एक मात्र तत्व है।

इसलिए कि संसार में प्राणियों की विभिन्नता का उत्तर इसके सिवा और किसी प्रकार नहीं मिल सकता।

इसलिए कि समय समय पर उत्पन्न होने वाले मनुष्यों ने अपने पूर्व जन्म का हाल बतला कर इसका प्रत्यक्ष प्रमाण दिया है।

इसलिए कि आत्मोपदेश से इस की सिद्धि होती है इत्यादि इत्यादि।

सृष्टि ओर प्रलय का चक्र दिन रात को तरह अनादि काल से चला आता है ओर अनन्त काल तक चला जाएगा-संसार के प्रकार की दृष्टि से आवश्यक है कि प्रत्येक घटना दुहराई निघराई जाया करे। गेहूँ बोया जाता है, अन्न उत्पन्न हुआ वह फिर बोया जाता है उससे फिर अन्न की उत्पत्ति होती है, सूरज निकलता है फिर अस्त हो जाता है फिर निकलता है, इसी प्रकार प्राणी भी संसार में उत्पन्न होते हैं, मर जाते हैं फिर उत्पन्न होते हैं।

संसार में एक पुरुप गरीब है, दूसरा अमीर है, एक रोगी है दूसरा नीरोग इत्यादि। इसका कारण यदि ईश्वरेच्छा हो तो फिर ईश्वर के जिम्मे अन्याय और पक्षपात का पातक रखना पड़ेगा क्यों उसने एक को अन्धा बनाया और दूसरे को समाखा ? परन्तु यदि इसका उत्तर यह दिया जावे कि मनुष्य अपने पहले जन्म के कर्मो हीसे अन्धा और समाखा लूला और लंगड़ा, अमीर और गरीब होता है तो किसी को भी फिर अगर मगर करने की गुन्जाइश बाकी नहीं रह सकती।

२) एक समय समस्त संसार में आवागवन माना जाता था

इमरसन ने जीवन को सीढ़ी से उपमा देते हुए एक जगह लिखा है कि ऐसी सीढ़ी नीचे भी हैं ऊपर भी, कभी हम ऊपर बढ़ते हैं कभी नीचे उतरते हैं। (Re in Carnation by Walker p. 23)

ओविड (Ovid) ने पाइथा गारस पर एक कविता लिखी है उसमें उसने मृत्यु को पुरानी माता बतलाते हुए लिखा है कि वह सदैव नए २ रूपों में प्रकट हुआ करती है। (Dryden's translation in English) अफ़लातून ने लिखा है कि जीवात्मा सदैव अपने लिए नया वस्त्र चुनता रहता है। (Re in Carnation by Walker p.27.)

औरिजिन जो एक ईसाई विद्वान् था और ईसाई सन के प्रारम्भिक वर्षों में हुआ। वह आवागमन को मानता था। इसने एक जगह लिखा है कि जो रूहें दुनियां में शरीर देकर भेजी जाती हैं वे जो अपराध करती हैं उनसे उनके आइन्दे जन्मों की अवस्था बिगड़ती रहती है। उनकी वर्तमान अवस्था का कारण भी उनके पहले कर्म हीहुआ करते हैं।

रोम के पादरी नौमिसियस साइने सियस और हिलारियस भी खुले तौरसे आवागवन के सिद्धांत का समर्थन करते थे।

६) सन् ५५१ ई. में कुस्तुनतुनियां की धर्म्म सभा ने ने ओरिजिन को शिक्षा को दूपित ठहराया। कौन्सिल के निश्चय के बाद भी आवागवन बराबर माना जाता रहा। औरिज की वहन इस सिद्धां को मानती रही और "जेरोम" तो छिप छिप कर इस शिक्षा का प्रचार करता रहा।

४) चौथी सदी के अन्त में स्पेन के एक ईसाई मजिस्ट्रेट ने ७ पुरुषों को आवागवन के मानने पर मृत्यु दण्ड दिया। इसी प्रकार अन्य स्त्री पुरुषों को भी कड़े दण्ड मिलते रहे। परन्तु इतना कुछ होने पर आज भी दुनियां की आधी से अधिक आबादी आवागवन के सिद्धान्त के आगे सिर झुकाती है।

गत ८-१२-३५ को आर्य समाज चावड़ा बाजार देहली के साप्ताहिक सतसंग में श्री पं. रामचन्द्र जी देहलवी ने पुनर्जन्म विषय पर एक सारगर्भित व्याख्यान दिया था। उस व्याख्यान का सार इस प्रकार है-

'काल का विभाग तीन भागों में है, भूत, भविष्यत और वर्तमान। भूतकाल हमारे सामने नहीं है और न वह लौट सकता है परन्तु वह अपने पैरों के चिन्ह छोड़ जाता है जिससे हम उसका पता लगा सकते हैं। उदाहरणार्थ किसी व्यक्ति की उम्र का अन्दाजा हम उसके मुह से कर लेते हैं। उसके बीते हुए वर्ष हमारे सामने नहीं है। परंतु उसके मुँह के चिन्ह ऐसे हैं जैसे हमने बार २ इसी उम्र के व्यक्तियों के मुँह पर देखे हैं। काल की माप अनुमान से ही होती है। यदि संसार में परिवर्तनशील वस्तुएँ न होती तो समय के सम्बंध में कोई अन्दाजा नहीं कियाजा सकता था। जिस प्रकार हम धूप देख कर दिन का अनुमान करते हैं। यदि धूप जगह न बदले तो कितना दिन व्यतीत हुा इसका अनुमान कैसे हो। समय परिवर्तन से नापा जाता है यही इसका पैमाना है। पण्डित जी ने वैशेषिक दर्शन के एक सूत्र का हवाला दिया जिसमें अंकित है कि जितनी चीजें नित्य हैं उन पर काल का कोई प्रभाव नहीं पड़ता है। इसलिए परमात्मा पर काल का प्रभाव नहीं होता और अनित्य चीजों पर होता है।

भूतकाल के सम्बन्ध में पण्डित जी ने व्याख्या की कि इसके शिर पर आगे दो बाज हैं पीछे नहीं अर्थात् जिसने पहिले से प्रवन्ध कर लिया उसके वश में तो समय आ जाता है परन्तु बाद में पछताने वा यत्न करने से गुज़रा हुआ वक्त वापस नहीं आ सकता। समस्त शरीरों के साथ परिवर्तन जुड़ा है और यह एक स्थिर सिलसिला चला जाता है।

आना और जाना

इस सम्बन्ध में पण्डित जी ने कहा कि आना और जाना सापेक्ष शब्द हैं। जिस प्रकार छोटा और बड़ा दूर और पास इत्यादि एक दूसरे की निस्बत से हैं उसी प्रकार आना और जाना एक दूसरे की निस्बत से है। जो व्यक्ति यहां आता है वह कहीं ओर से आता है। जिस जगह से वह आया है वहां उसका जाना कहा जाएगा और यहां उस का आना कहा जाएगा और इसी प्रकार यहां से जाने पर उसका जाना और जहां पहुँचेगा वहां उसका आना कहा जाएगा। भूत की निस्बत से जाना और भविष्यत और वर्तमान की निस्ब्रत से आना कहलाता है।

इसी प्रकार जो यहां पैदा होता है वह कहीं मरा है और जो यहां मरता है वह कहीं पैदा होगा इन दोनों चीजों का तारतम्य हर चीज में पाया जाता है इससे किसी भी मज़हब का मानने वाला इन्कार नहीं कर सकता।

पिछले चिन्ह

इस भूमिका के बाद पंडित जी ने पुनःजन्म के सम्बन्ध में दलोलें देनी शुरू की। आपने कहा कि यह बात प्रायः देखने में आई है कि एक ही माता पिता के कई बच्चे हैं जिनमें से एक दूसरे का स्वभाव भिन्न २ होता है। यह जरूर है कि माता पिता के स्वभावों का असर भी बच्चे पर होता है परंतु इसके समान होते हुए भी बच्चों के स्वभावों और उनके स्वाभाविक रुझान इत्यादि में अन्तर पाया जाता है। एक लड़का इतना तेज निकलता है कि वह एक किताब को जल्द खत्म कर देता है और दूसरा मन्द बुद्धि होता है जिस पर मार पड़ जाती है। इसका कारण पिछले संस्कार हैं जिनके कारण यह विचित्रता देख पड़ती है।

ईसाई और मुसलमान ऐसा मानते हैं कि परमात्मा ने अपनी मर्जी से किसी को अच्छा, किसी को बुरा, किसी को बुद्धिमान और किसी को मूर्ख बनाया। परन्तु ऐसी अवस्था में परमात्मा पर दोष आता है। कोई कार्य बिना कारण के नहीं होता है। परमात्मा न्यायकारी है अतः कर्मों के अनुसार फल देता है। यदि विचित्रता को केवल संसार की शोभा के लिए रखा गया है तब भी यह प्रश्न बाकी रहता है कि एक के साथ प्रेम और दूसरे के साथ ज्यादती क्यों की गई। यदि ऐसा न होता तो संसार का प्रबन्ध नष्ट भ्रष्ट हो जाता परमात्मा का तमाम इन्तज़ाम बड़े न्याय और देख भाल का है।

कर्मों के फल

पण्डित जी ने कहा कि कार्य के सम्बन्ध में यह नोट कर लेना चाहिए कि एक तो वह होता है जो हम स्वयं पैदा करते हैं अर्थात् जैसे कर्म करते हैं वैसे फल मिलते जाते हैं दूसरे कर्म की सजा परमात्मा को ओर से मिलती है। आप ने कहा कि ईसाई भी ऐसा मानते हैं कि पापी ईसा मसीह के पास आए और ईसामसीह ने कहा कि तुम्हारे पाप क्षमा किए गए और उनकी बीमारियां दूर हो गई। इससे यह परिणाम निकलता है कि उनकी बीमारियां उन्हीं के पापों का फल थी, जो कर्म उन्होंने पहले किए थे। उनका फल अब मिल रहा है और जो काम हम अब कर रहे हैं उसका फल भविष्य में मिलता है। ईसाई यह मानते हैं कि परमात्मा ने अपनी कुदरत जाहिर करने के लिए भिन्न २ हालतें पैदा की हैं मगर परमात्मा की कुदरत वास्तव में उन नियमों से जाहिर होती है जिनके अधीन यह सब कुछ दो रहा है।

आर्य समाज महबूबाबाद में
श्रावणी पूर्णिमा के दिन

श्री नारायण प्रकाश लोया जी व उनके परिवारजन तथा आर्य बन्धु आदि मिलकर आर्य समाज महबूबाबाद में पूर्णिमा यज्ञ को सम्पन्न किया।

निवेदन

आर्य जीवन के पाठकों से निवेदन है कि इस पाक्षिक पत्रिका का वार्षिक चन्दा रू. 250/ तथा आजीवन चन्दा रू. 2,500 अविलम्ब सभा कार्यालय में भेजने का कष्ट करें।

ऑनलाईन द्वारा अकाउन्ट नंबर 43341 (महेश को-ऑपरेटिव बैंक) काचिगुड़ा, हैदराबाद। I.F.S.C. कोड नंबर A.P.M.C. 0000010 चेक के लिए 'आर्य जीवन' के नाम से भेज सकते है। इसके पश्चात् कृपया पोस्ट कार्ड द्वारा अपना पूर्ण पता पिन कोड़ के साथ 'आर्य प्रतिनिधि सभा, आ.प्र.- तेलंगाना महर्षि दयानन्द मार्ग, सुल्तान बाज़ार, हैदराबाद-500095 के पते पर भेज दे ताकि आपका पता भी मालूम होगा और रसीद भेजने में सुविधा होगी।

పాఠకులకు విజ్ఞప్తి

ఆర్య జీవన్ పాఠకులారా ఆర్య జీవన్ పత్రిక మన అరుదైన పత్రిక. దాన్ని చదువుదాం, చదివిద్దాం. ఆర్య సమాజ వ్యాప్తికై ఇతోధికంగా కృషి చేద్దాం.

మన వంతుగా ఆర్య జీవన్ వార్షిక చందా 250 రూపాయలు శాశ్వత చందా రూ॥ 2,500/- పంపించి పత్రిక వ్యాప్తికి ధర్మ ప్రచారానికి కృషి చేద్దాం.

ఈ క్రింది వివరాలకు వార్షిక చందా లేదా శాశ్వత చందా పంపించగలరు.

ఆన్‌లైన్ అకౌంట్ నెం. 43341 (మహేశ్ కొ-ఆపరేటివ్ బ్యాంక్, కాచిగూడ, హైదరాబాద్ I.F.S.C. కోడ్ నెం. A.P.M.C. 0000010 ఆర్య జీవన్ పేరు మీద పంపించ గలరు.

జీవన కళ
త్రివేణి సంగము-ఆస్తికత యొక్క ప్రవాహము

మిత్రులారా ! రూపము కండ్లకు సంబంధించిన విషయము. రూపములను మనము కండ్లతోనే చూడగలము, శబ్దము చెవులకు సంబంధించిన విషయము. గంధము వాసన ముక్కుకు సంబంధించిన విషయము, రసము నాలుకకు సంబంధించిన విషయము, స్పర్శ జ్ఞానము చర్మమునకు సంబంధించిన విషయము. ఆయా విషయములు ఆయా ఇంద్రియములు గ్రహించును. ఒక దాని విషయ మును మరొక ఇంద్రియము గ్రహింప జాలదు. పరమాత్మ తత్వము ఇంద్రియముల ఈ విషయము కాదు. ఇంద్రియము లేవియు పరమాత్మ తత్వమును గ్రహింప జాలవు. ఇది ఇంద్రియాతీతమైనది, అంతేకాదు మనస్సు-బుద్ధి అను అంతరేంద్రియములు గూడా పరమేశ్వరుని గ్రహింప జాలవు. ఆ పరమాత్మ కేవలము ఆత్మకు విషయము, ఆత్మ మాత్రమే పరమేశ్వరుని గ్రహించి అనుభూతి అనుభవ మును పొందగలదు. నిర్మల నిరావరణ-అచంచల ఆత్మ యందు మాత్రమే పరమేశ్వ రుని సుఖోదక అనుభవము కలుగును.

ఇచ్చట కొందరు మిత్రులకు మరొక సందేహము కలుగుచున్నది, అదేమనగా, ఈశ్వరుని అస్తిత్వమును అంగీకరించు చున్నాము. కాని అతనికి ఆకారరూపములో కాళ్ళ చేతులు ఇతర అవయవములు ఏవి లేవు గదా ? అతడుఈ ప్రపంచ పదార్థము లను ఎట్లు తయారు చేసినాడు ?

మిత్రులారా ! ఇచ్చట మనము ఒక విషయమును బాగా గుర్తుపెట్టు కొనవలెను. కాళ్లు-చేతులు మరియు ఇతర బాహ్య అవయవములన్నియు మన శరీరమునకు బయటి అవసరముల కొరకే పనికి వచ్చును, కాని శరీరము లోపలి పనులకు ఇవి ఏమి పని చేయవు. మనము ఒక పుస్తకమును ఎత్త వలసినపుడు ఆ చేతిని రెండవ చేతితో ఎత్తెదమా ? మనము మన తలను తిప్పవలె నన్నను, కండ్లు మూయవలెనన్నను, కన్నులు తెరువవలెనన్నను, ముక్కుతో వాసన చూడవలె నన్నను, కాళ్లతో నడువ వలెనన్నను, మనస్సుతో సంకల్పము చేసి బుద్ధితో విచా రించి చేయుదుము. ఈ పనులన్నియు చేతులు లేకుండగానే చేయగలము, ఎందుక నగా మన శరీరములో వ్యాపించియున్న ఆత్మ తత్త్వము ఈ అవయవములలో గతిని కలిగిం చును. అది ఇవన్ని అవయవములలో వ్యాపిం చియున్నది. అదే విధముగా పరమపిత పరమేశ్వరుడు సంపూర్ణ సృష్టిలో వ్యాపించి యున్నాడు. కావున అతనికి సృష్టినిర్మాణము కొరకు ఈ బయటి అవయముల అవసరము లేదు.

“ఈశావాస్య మిదం సర్వం" ఈ వేద మంత్రార్థము "ఈశ్వరుడు సర్వవ్యాపకుడు, సర్వశక్తి మంతుడు, సర్వజ్ఞుడని మరియు నిరాకారుడని ప్రతిపాదించుచున్నది.

మిత్రులారా ! సజ్జనులారా ! ప్రకృతి-జీవాత్మ-పరమాత్మ ఈ మూడు శాశ్వత సత్తా కలిగిన తత్త్వములు ఉన్నావని ఇంతవరకు మనము తెలుసుకొనినాము. ఈ మూడు లేకుండా లోకములో ఏ కార్యము జరుగదు అయితే ఈ మూడింటిలో అంతరమేమున్నది? ఈ మూడు పరస్పరము ఏ విధముగా సంబంధము కలిగి యున్నవి ? వాటి ఉప యోగమేమి తెలిసి కొనవలెయును.

ఈ మూడు కూడా సత్తా కలిగిన సత్ పదార్థములు. ఈ మూడింటిలో ప్రకృతి విశేష మేమనగా, ఇది సత్ పదార్థము, ఇది యెల్ల ప్పుడు ఉండునది. జీవాత్మలో విశేషమేమున్న దనగా ఇది సత్ పదార్థముతో పాటుచిత్ కూడా కలిగి యున్నది. జీవాత్మ సత్+చిత్‌గా నున్నది. ఇందు చైతన్యత-ఇచ్ఛా-ద్వేషము-జ్ఞానము-ప్రయత్నము-సుఖము-దుఃఖము యొక్క అనుభూతి అనుభవ విశేషత కలదు. పరమాత్మలో జీవాత్మ కన్న మరొక విశేషత ఆనందము ఉన్నది. అనగా పరమేశ్వరుడు సత్+చిత్+ఆనందస్వరూపుడని తెలియు చున్నది.

ఓం ఉద్వయంతమ సస్పరిస్వః పశ్యంత ఉత్తరం। దేవం దేవత్రా సూర్యమగన్మ జ్యోతి రుత్తమమ్ ॥ -యజు 33-54

వైదిక సంధ్య ఉపస్థాన మంత్రములలో ఈ ప్రథమ మంత్రము ఈశ్వర-జీవాత్మ మరియు ప్రకృతి ఈ మూడింటి అంతరము లను చాలా సుందరముగా వర్ణించబడినది. మంత్రములో మూడు శబ్దములున్నవి. 1) సత్, 2) ఉత్తరం, 3) ఉత్తమం అనగా ప్రకృతి సత్-జీవాత్మ-ఉత్తరం-మరియు పరమాత్మ ఉత్తమమ్‌గా శ్రేష్ఠత కలిగి యున్నవి. ప్రకృతి (Good) జీవాత్మ (Better) పరమాత్మ (Best).

ఔను ప్రకృతి కూడా శ్రేష్ఠమైనది. ఇది చెడ్డది నికృష్టమైనది కాదు విడువదగినది కాదు. కొందరు అనుకొనుచున్నట్లు ఈ ప్రకృతి మాయలేక మోనము కాదు. ప్రకృతి మాతవంటిది.

దీనిని ఈ విధముగా నిందించుట సరియైనది కాదు. పరమేశ్వరుడు ప్రకృతి పరమాణువులతో అత్యంత మనోహరమైన సృష్టిని రచించి జీవాత్మలకు అన్నాది ఆహార పదార్థ ములతో తృప్తి కలిగించు చున్నాడు. జీవాత్మ ప్రకృతి కన్న శ్రేష్ఠమైనదే కాని జీవాత్మ ప్రకృతి ద్వారానే పరమాత్మను పొందగలదు. అన్య మార్గము మరేదియు లేదు. పరమాత్మ జీవాత్మ కన్న అత్యంత శ్రేష్ఠమైనది. పరమేశ్వరునిలో ఆనంద గుణము విశేషముగా నున్నది. జీవాత్మలో ఆనందము తక్కువగా నున్నది. కావున జీవాత్మ పరమాత్మను ఆశ్రయించి అతనిలోని ఆనందమును అనుభవించుటకు నిరంతరము ప్రయత్నించవలెను. జీవాత్మకు ఆనందము మరియు శాంతి అవసరము. ఈ గుణములు ఈశ్వరుని యందే ఉన్నవి.

మిత్రులారా ! మాతలారా ! ఈశ్వరుడు ఎచ్చటో ఒకచోట విశేషస్థాన మందు కలడని భావించు కొనుచున్నారు. కొందరు నాల్గవ ఆకాశముపైన, మరికొందరు ఏడవ ఆకాశ ముపైన మరికొందరు క్షీరసాగరమందు శయనించుచున్నాడని చెప్పుచున్నారు, కొందరు నిరాకారుడు-న్యాయకారియైన ఆ పరమేశ్వ రునికి వివిధ రూపములను కల్పించి నానా విధ రూపములలో చిత్ర విచిత్రముగా మూర్తు లను తయారు చేసి, వస్త్రములతో అలంక రించి, బంగారు కిరీటములను, వజ్ర వైడూర్య ఆభరణములను ధరింప జేసి ఆరాధన సమారాధన భోగ ప్రసాదములతో ఒక సజీవ మానవునికి వలె తినిపించి త్రాగించుటకు ప్రయత్నము చేయుచున్నారు. అచేతన విగ్రహము నకు ముందు చేతులు జోడించి వివిధ కోరిక లను

తీర్పుమని ప్రార్థించుచున్నారు. అంతే కాదు మా కోరికలు నెరవేర్చినచో మీకు బహు మతులు ఇవ్వగలమని ఆశ చూపించుచు న్నారు. ఆహా ! బుద్ధి జీవులకు ఎంతటి అజ్ఞా నము ఆవరించినది !

ఈశ్వరుడు సచ్చిదానంద స్వరూపుడు, నిరాకారుడు, సర్వశక్తిమంతుడు, దయాళువు, అజన్మ, నిర్వికారుడు, అనాది, అనుపమ సర్వాధారుడు, అమరుడు, అభయుడు, నిత్యుడు, పవిత్రుడు మరియు సృష్టికర్త ఈశ్వ రుడు ఒక్కడే-జీవాత్మలు అనేకములు ఈశ్వ రుడు సర్వజ్ఞుడు, జీవాత్మ అల్పజ్ఞుడు. ఈశ్వ రుడు విభుడు, జీవాత్మ అను. ఈ విధముగా ఈశ్వర జీవాత్మలలో సర-నారాయణ భేద మున్నది.

ఓ నా ఆత్మ స్వరూపులారా ! నీవు నీ ఆత్మ గౌరవాన్ని తెలుసుకో ! పరమాత్ముడు నీ బంధువు "సనోబంధుర్జనితా" మరియు నీ సఖుడు "సయూజా సఖాయపి" ఘనిష్ఠ మిత్రుడు నీవు ఈ సఖుని ఆదర్శముగా యెంచుకని ప్రకృతి ఫలములను కర్మానుసా రము అనుభవింపుము, కాని వాటి యందు ఆసక్తి-మమకారము పెంచుకొనవద్దు. "త్వకైన భుంజీథా" అతని వలన ప్రదత్తమైన భోగములను త్యాగపూర్వకముగా అనుభ వించు. "సంయమఃఖలు జీవనం" సంయ మమే జీవనము మరియు అది జీవన కళ.

జీవాత్మ ఒక యాత్రికుడు. అతని యాత్ర యొక్క లక్షము ఆనందస్రోత శాంతిధామ పర మాత్ముని ప్రాప్తి. కాని ఈ యాత్ర కొరకు సాధనములు కావలెనుగదా ! ఈ శరీరము ఈ ఇంద్రియములు, ఈ ధనము, ఈ వైభ వము, ఈ సంపూర్ణ ప్రకృతి, ప్రకృతి జన్య పదార్థములన్నియు జీవాత్మ యాత్రకు సాధన ములు కఠోపనిషత్ ఋషి ఈ విధముగా చెప్పెను.

ఆత్మానం రథినంబిద్ధి శరీరం రథమేవతు ।
బుద్ధింతుసారథిం బుద్ధిమనః ప్రగహమే వచం ॥
ఇంద్రియాని హయనాహు ర్విషయాంస్తుషే గోచరాన్ । ఆత్మేంద్రియ మనోయుక్తం భోక్తేత్యా హుర్మనీషిణః ॥

ఈ శరీరము ఇంద్రియములు బుద్ధి-మనస్సు ఇవన్నియు సాధనములు రథీకుడైన ఆత్మ ప్రియతమ ప్రభువును చేరుట లక్ష్యమైయు న్నది. మన ఈ శరీరము దైవదత్తమైన నావ-నౌక ఈ భవసాగరమును దాటి భగవంతుని వొడిలో చేరుటకు దివ్యసాధనము. అదే విధ ముగ మన పరివారము, మన సమాజము- మన రాష్ట్రము ప్రభువుకు ప్రియమైన ఈ సం పూర్ణ విశ్వబ్రహ్మాండము మన యాత్ర లక్షము చేరుటకు అత్యధిక సాధనులు. ఈ యాత్రలో విభిన్నములైన మజిలీలున్నవి. విశ్రాంతి స్థల ములున్నవి. యాత్రికుడైన జీవాత్మకు నూతన శక్తిని ప్రధానము చేయు ఈ సంసారిక కర్తవ్య కర్మలు జీవాత్మకు బంధనములు రాకూడదు, ఇవి బంధనములు ఎప్పుడు కాగలవనగా, యెప్పుడైతె జీవుడు తన సాధనములనే సాధ్య మనే భావన కలిగి యుండునో అప్పుడు అవి బంధనములు అగును. నదిని దాటి వొడ్డు నకు చేరుటకు నావ సాధనము, కాని మనము నావ యొక్క అందమునకు లోబడి అందులో కూర్చొని దానియందు ఆసక్తి పెంచుకొనినచో ఆ నావ మనలను నది దాటించ లేదు. అప్పుడు ఆ నావయే మన పురోగమనమునకు నిబంధనము కాగలదు. మనము లక్ష్యము చేరుకొనలేము. ఈ దోషము ప్రపంచ పదార్థములదికాదు, ఈ పదార్థములు మన ఉపయోగము కొరకు లభించినవి. సాధన రూపములో ఉపయో గించు కొనుటకు ఇవి లభించినవి. వాటిని మనము ఉ పయోగించు కొనవలెను. కాని ఇచ్చట మనము వేదమాత యొక్క సందేశ మును మరువవద్దు.

"త్యక్తేన భుంజీథా" త్యాగపూర్వకముగా అనుభవించవలెను. నావ మనకు లభించినది ఉపయోగించుకొని విడిచి పెట్టుట కొరకు అనగా ప్రపంచ పదార్థములను అనుభవించు, కాని దానియందు లగ్నమై అదే సాధ్యముగా భావించకూడదు. దానిని పరిమిత సీమలో అనుభవించి త్యాగ భావముతో విసర్జించవలె ఈ త్యాగము మరియు భోగముల సమన్వ యమే జీవనము యొక్క జివించె కళ. మన భోగమే యోగరూపాము కావలెను, యజ్ఞమ యము కావలెను. ఈ తత్త్వ జ్ఞానమును మనకు వేదమాతయే తెలుపుచున్నది. వేద మాత తన అమృత పుత్రుడైన మానవునకు జీవన కళను నేర్పుచు ఉపదేశించినది. "మాగృధః కస్యసిద్ధనం" ఓ నా ప్రియమైన పుత్రా ! నీవు లోభివి కావద్దు, సంయమును విడువవద్దు, ఎవరి అధికారమును బలవంత ముగా లాగు కొనవద్దు. మరొకమాట బాగా గుర్తుంచుకొనుము, నీ వద్ద ఏదైదె ఉన్నదో "విద్యా-బలము-ఐశ్వర్యము" ఇవన్నియు నీవి కావు. "కస్యసిద్ధనం" ఇవి యన్నియు సుఖ స్వరూపుడైన పరమేశ్వరునివి. కావున అతని వస్తువులను, అతని చరణముల యందు అర్పించుచు ఒక విధమైన అలౌకిక ఆనంద మును అనుభవింపుము. "ఇదన్నమమ" ఇది నాది కాదు, ఇది నా ప్రభువుది, ఇటువంటి భావనయే యజ్ఞమయ భావన "అయం యజ్ఞో విశ్వస్య నాభిః" ఈ యజ్ఞ భావనయే విశ్వ చక్రము యొక్క నాభి, ఈ యజ్ఞమయ జీవనమే జీవన కళా రహస్యము. ఈ యజ్ఞ జీవనమును మన నిజ జీవితములో ప్రతి ష్ఠించు కొనవలెను. జీవన కళను మనము మన పరివారిక, సామాజిక, రాష్ట్రీయ మరియు విశ్వ జీవనములో ఉపయోగించు కొనవలెను. దాని వలన శ్రేష్ఠ ప్రకృతి సాధ ములు శ్రేష్ఠతర జీవాత్మకు గౌరవమును ప్రసాదించును.

ఆర్య సమాజ్ రాష్ట్రపతి రోడ్, సికింద్రాబాద్‌లో

శ్రావణి పూర్ణిమ నాడు నిర్వహించిన శ్రావణి ఉపాకర్మ పర్వము మరియు ఆర్య సత్యాగ్రహ బలిదాన దినములో పాల్గొన్న ఆర్య బంధువులు మరియు గురుకుల్ మలక్‌పేట్ బ్రహ్మచారులు

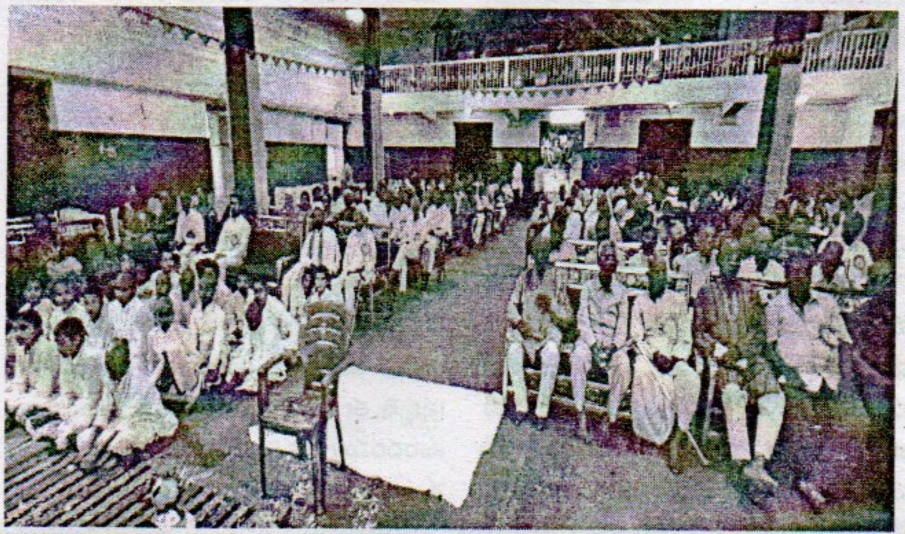

లాల్ బహదూర్ శాస్త్రిది హత్యే!

భారత అణుశాస్త్రవేత్త హోమి భాభాది కూడా.. అమెరికా సీఐఏ కుట్ర పన్ని చంపేసింది

తన పుస్తకంలో వెల్లడించిన సీఐఏ మాజీ అధికారి అప్పట్లో ఆపరేషన్స్ బాధ్యతలు తనవేనన్న రాబర్ట్ క్రౌలీ

ఇంతకాలం అనుమానాస్పద మృతిగా చరిత్రలో నిలిచిపోయిన భారత మూడో ప్రధాన మంత్రి లాల్ బహదూర్ శాస్త్రి హత్య అని నిర్ధారణ అయింది ! అంతేకాదు.. భారత అణుశాస్త్ర పితామహుడు హోమి జహంగీర్ భాభాది కూడా విమాన ప్రమాదంలో జరిగిన మరణం కాదని.. అది కూడా భారీ కుట్రతో చేసిన హత్య అని తేలి పోయింది..! ఇంతకాలం అమెరికా అత్యున్నత దర్యాప్తు సంస్థ సీఐఏ ఈ రెండు హత్యల వెనక ఉన్నదనే అనుమానాలు పటాపంచలై.. అదే నిజమనే విషయం వెలుగులోకి వచ్చింది. ఈ ఇరువురు పెద్దల మరణాలు జరిగినప్పుడు సీఐఏ ఆపరేషన్స్ బాధ్యతలు నిర్వర్తించిన రాబర్ట్ క్రౌలీ స్వయంగా ఈ విషయాలను వెల్లడించడం వల్ల.. ఇవి వట్టి ఆరోపణలనో.. ఊహాజనితాలనో కొట్టిపారేయడానికి వీలులేదని స్పష్టమవుతోంది. ఆయన తన పుస్తకంలో ఈ సంచలన విషయాలను వెల్లడించారు. అమెరికాకు చెందిన ప్రఖ్యాత రచయిత గ్రెగొరీ డగ్లస్ కూడా తన 'కన్వర్జేషన్ విత్ ది క్రౌ' పుస్తకంలో ఈ విషయాలను పేర్కొన్నారు. రాబర్ట్ క్రౌలీతో సంభాషణల రికార్డులను ప్రస్తావిస్తూ–శాస్త్రి బాబాలది సీఐఏ చేసిన హత్య అని వివరించారు.

అణు కార్యక్రమాల వల్లే..

'గోవులను ప్రేమించే భారతీయులు ఎంతో తెలివైనవారు. ప్రపంచంలో వారు గొప్ప శక్తిగా ఎదగబోతున్నారు. భారతీయులు స్వయంసమృద్ధి సాధించడాన్ని మేము కోరుకోలేదు" అని రాబర్ట్ క్రౌలీ తన పుస్తకంలో పేర్కొన్నారు. భారత్ అణ్వాయుధ కార్యక్రమాలను వేగంగా ముందుకు తీసుకెళ్లడంలో శాస్త్రి, భాభా తీవ్ర ప్రయత్నాలు చేస్తున్న సమయం అది అని రష్యాతో భారత్ అంటకాగుతున్న నేపథ్యంలో ఆ చర్యలు అమెరికాకు ఎప్పటికైనా ముప్పేనని గ్రహించి వారి హత్యకు సీ.ఐ.ఏ కుట్ర పన్నిందని వివరించారు. "హోమి భాభాను ఎయిర్ ఇండియా విమానంలో వియన్నా వెళుండగా హత మార్చాం. విమానంలోకి పేలుడు పదార్థాలు పంపడం ఓ పెద్ద తంతు. ఆయన ప్రయాణిస్తున్న విమానాన్ని తొలుత వియన్నా గగనతలంలో

పేల్చేద్దామనుకున్నాం. చివరి నిమిషంలో పర్వత ప్రాంతంలో కూలిపోయేలా చేశాం. ఎందుకంటే విస్ఫోటనం తర్వాత విమానం ముక్కలుముక్కలు కావడానికి ఎత్తైన పర్వతప్రాంతం అనువైన ప్రదేశం. పైగా అక్కడ జన నష్టం తక్కువగా ఉంటుంది. మహా అయితే పర్వత ప్రాంతాల్లోని నాలుగైదు మేకలో గొర్రెలో మరణిస్తాయి. అదే వియన్నా నగరంపైన విమానం కూలితే మరణాలు ఎక్కువగా ఉంటాయి" అని క్రౌలీ తన పుస్తకంలో పేర్కొన్నారు. భారత్‌ను అణ్వాయుధ దేశంగా మార్చే శక్తి బాబాకు ఉందని అతను ఎప్పటికైనా దాన్ని సాధిస్తాడని అందుకే అతణ్ని చంపాలని సీఐఏ నిర్ణయించిందని వివరించారు. అతని హత్యకు ముందు.. ఆయన రేడియోలో ఓ కీలక ప్రకటన చేయడం కూడా సీఐఏ తన టాస్క్‌ను త్వరగా (జనవరి 24, 1966న) పూర్తి చేయడానికి కారణమైందని పేర్కొన్నారు. "18 నెలల్లో భారత్ అణ్వస్త్ర దేశం కానుంది" అని భాభా రేడియోలో ప్రకటించారన్నారు. కాగా ఈ ప్రమాదంలో భాభాతోపాటు విమానంలో ఉన్న 116 మంది మరణించారు.

శాస్త్రినీ అందుకే చంపారు ?

లాల్ బహదూర్ శాస్త్రి కూడా అణ్వస్త్ర కార్యక్రమాన్ని చురుగ్గా ముందుకు తీసుకెళ్లారని క్రౌలీ తన పుస్తకంలె వెల్లడించారు. "1966 జనవరి 11న పాక్ అధ్యక్షుడు మహమ్మద్ అయూబ్ ఖాన్‌తో కలిసి ఉబ్బెకిస్థాన్ రాజధానిలో తాష్కెంట్ ఒప్పందంపై సంతకం చేశారు. అదే రోజు అర్ధరాత్రి దాటాక 1.32 గంటలకు ఆయన గుండెపోటుతో మరణించారు. భారతీయులు అణుబాంబును తయారు చేస్తే దాన్ని తొలుత తమ శత్రుదేశమైన పాకిస్థాన్ పైనే వేస్తారని భావించామని ఆయన వివరించారు. భారత అణ్వాయుధ కార్యక్రమాన్ని అడ్డుకోవ దానికి సీఐఏ ఎన్ని ప్రయత్నాలు చేసినా 1974 మే 18న రాజస్థాన్‌లోని పోఖ్రాన్‌లో మొదటి అణ్వస్త్ర ప్రయోగాన్ని విజయవంతంగా పూర్తి చేయడం గమనార్హం.

ఆసియాలో వరి లేకుండా చేసేందుకు!

ఆసియాలో వరి సాగు అనేదే లేకుండా చేసేందుకు కూడా ఏఐఏ కుట్ర పన్నిందని రాబర్ట్ తన పుస్తకంలో వివరించారు. అందుకోసం ఓ వ్యాధిని అభివృద్ధి చేశామంటూ సంచలన విషయాన్ని వివరించారు. వరి లేకుంటే ఆసియా ప్రజలు ఆకలితో అలమటించి మరణిస్తారని తాము అంచనా చేసినట్లు చెప్పారు. కాని, దాన్ని అమలు చేయలేక పోయామన్నారు.

ముత్యువు యొక్క వాస్తవిక స్వరూపము

సజ్జనులారా ! ఈ మాట విచారణీయముగనే యున్నది. ఇది సత్యమే ! క్రియాత్మక సంసారములో మృత్యువు దుఃఖప్రథముగా గోచరింపబడుచున్నది. కాని ఇచ్చట మనము విచారించవలసిన విషయమొకటున్నది. చూడండి ! మృత్యు సమయములో కలుగు దుఃఖమునకు కారణము మృత్యు భయము. ఇచ్చట మీకు ఒక విచారణీయ విషయము ప్రస్తుతింపబడుచున్నది. ఈ విషయముపై గతములో కూడా కొంత విచారింపబడినది.

ప్రపంచమందలి ప్రతి పదార్థము సృష్టి కర్తయైన ఈశ్వరునిదైయున్నది. పదార్థములన్నియు మనుష్యులకు ఉపయోగార్తమివ్వబడినవి. మనుష్యుడు, ఈ ప్రపంచ పదార్థములన్నింటికి ప్రయోగకర్తయే కాని స్వామి కాదు. ఈ విషయము ఇంతకు పూర్వమే శాస్త్రీయముగా నిరూపింపబడినది. మనుష్యుడు తన స్వార్థబుద్ధితో ప్రపంచ పదార్థముల యెడ, మమకారము, రాగము, అనురక్తి పెంచుకొని ఈపదార్థములన్నియు “నావి” “వీటన్నిటికి నేను స్వామిని” యని ఎప్పటి నుండి అనుకొనుచున్నాడో, అప్పటి నుండి అతనికి కష్టములు-దుఃఖములు కలుగుచున్నవి. ఇవి ఎందుకు కలుగువలెనని ప్రశ్నింపవచ్చు. అయితే మీరు ఇచ్చట ఒక విషయము గుర్తుంచు కొనవలసి యున్నది. ప్రపంచములో మనుష్యుడు తాను కూడబెట్టుకొనిన పదార్థ ములను మృత్యువు వారి నుండి బలవంత ముగ విడదీయుచ్నుది. మృత్యువు యొక్క క్రియాత్మక రూపమిదియే. ఈ విషయము మరికొంత స్పష్టమగుటకు ఒక ఉదాహరణ ఇవ్వబడుచున్నది.

జయచంద్రుడనబడే ఒక గృహస్థుడు ఉండేవాడు. అతడు ఆ గ్రామములోని పెద్ద భూస్వామి. ధనవంతుడు. అతనికి భార్య పుత్రులు కూడా ఉండిరి. ఈ విధముగా అతడు ధన-ధాన్య కుటుంబ పరివార సంపదలతో సుఖముగా నుండెను. కొంతకాలము తర్వాత వయోవృద్ధుడై అవసాన కాలము సమీపించి మృత్యుశయ్యపై పడియుండెను. అతడు ఈ ప్రపంచము నుండి వెళ్లిపోవుటకు సిద్ధముగా నున్నాడు. ఇప్పుడు చెప్పండి; జయచంద్రుడు తాను వెళ్లిపోవుచున్నప్పుడు తన వెంట ఏమేమి తీసికొని వెళ్లగలడు ? జయచంద్రుడు తనవెఇుట ఈ ప్రపంచ పదార్ధాములను దేనిని తీసికొని వెళ్లడని మీ సమాధానము. అయితే అతడు తన జీవిత కాలములో చేసిన పుణ్య-పాపముల క్రియా కలాపముల సంచితమును మాత్రమే తనవెంట తీసికొని వెళ్లగలడని పెద్దలు తమ అభిప్రాయ ములను చెప్పిరి. జయచంద్రుడు తాను సంపాదించిన సంపత్తిని స్వయముగా స్వేచ్ఛగా ఇచ్చట వదలి వెళ్లుచున్నాడా ? లేక ఇంకేదైనా బలమైన కారణమున్నదా ? యెవరైనా తాను సంపా దించుకొనిన సంపత్తిని స్వేచ్ఛగా వదిలిపెట్టి వెళ్లలేరు. అందుకు బలమైన కారణమేదైనా ఉండవచ్చును. ఆ బలమైన కారణమే మృత్యు వు. అదది తప్ప ఇచ్చట మరొక కారణము ఏదియు ప్రతీతమగుటలేదు. తాత్పర్యమేమ నగా మానవులు తమ జీవిత కాలములో సంపాదించుకొనిన వస్తువులను, ధనసంపత్తి న్తటిని మృత్యువు వారి నుండి బలవంత ముగా విడిపించి వేయుచున్నది. మృత్యువు యొక్క స్వరూపమిదియే ! మృత్యుశయ్యపై పడియున్న జయచంద్రుడు తాను సంపాదిం చిన ధన సంపత్తినంతయు ప్రయోగాత్మకము గానే తనకు లభించినదే సత్యమును గ్రహించినట్లయితే, అతనికి ఎలాంటి దుఃఖము, క్లేశము కలుగదు. కాని ఇది యంతయు నాదేయని భ్రమ, మమత, ఆశ కలిగినపుడు మృత్యువు అతని నుండి ఆ సంపత్తిని బలవంతముగా విడిపించును. అట్లు బలవంతముగా విడిపోవుచున్నప్పుడు మానసిక క్షోభ, క్లేశము, దుఃఖము కలుగును.

చూడండి ! ఒక ఉపాధ్యాయుడు తన తరగతి గదిలోనికి వెళ్లి, అచ్చటి పుస్తకములను బ్లాక్‌బోర్డును, చాక్‌పీసులను, పెన్ను, పెన్సిల్లను స్వేచ్ఛగా అవసరానుగుణ్యముగా ఉపయోగించుకొనును. అతని పనివేళ ముగిసిన వెంటనే గంట మ్రోగును. ఉపాధ్యాయుడు తను ఉపయోగించుకొనిన వస్తువులన్నింటిని అచ్చటనే వదలి సంతోషముగా తరగతి గదిలో నుండి బయటకు వచ్చును. అతనికి తెలుసు-తాను ఉపయోగించుకొనిన వస్తువులు తనవి కావని. అవి ఉపయోగార్థమే తనకు ఇవ్వబడినవని. వాటిపై మమత, ఆశ లేకుండా సంతోషముగా బయటికి వచ్చును.

ఈ విధముగ స్పష్టమగుచున్నదేమనగా మృత్యువు స్వయమేవ దుఃఖ ప్రదము కాదు. కాని మనుష్యుడు ప్రపంచ పదార్థముల యందు మమకారము పెంచుకొని సమయమందు దుఃఖమును అనుభవించుచున్నాడు. ఈ విషయము మరికొంత స్పష్టముగ తెలిసికొనుట కొరకు మరొక ఉదాహరణ గమనించండి !

ఒక ప్రదర్శన శాలలో రకరకముల చూపు అద్దములు ప్రదర్శింప బడుచున్నవి. అందులో ఒకటి తన ముఖమును చూచుకొని నవ్వుకొనే విధముగా వికృత రూపము దర్శించబడుచున్నది. దానిలో తన నిజస్వరూపమునకు భిన్నమైన వికృత రూపమును చూచి మనము నవ్వుకొందుము. కొన్ని మంచి అద్దములలో ముఖము వికృతముగా దర్శింపబడినది. అది అద్దము యొక్క దోషవే కాని తన ముఖములో దోషమేమీ లేదను విషయము నీకు స్పష్ట ముగా తెలిసియే యుండును. అదే విధముగ మృత్యువును మనము మమతా, మరియు నికృష్ట స్వార్థబుద్ధి అద్దములో నుండి చూచిన పుడు దాని ప్రతిబింబము మనకు భయం కరముగా మరియు భయము గొలుపు విధ ముగా గోచరమగుచుండును. అనగా దోషము మృత్యువు యందు లేదు. అది తన స్వార్త మమతాబుద్ధి యందున్నది.

మరొక ఉదాహరణ గమనించండి;

ఈ సత్సంగములో ఉపస్థితులైన సజ్జనులలో రామదత్తు నామము గల ఒక వ్యక్తిని స్తసంగ కార్యనిర్వహణ అధికారి ఒక ముఖ్యమైన కార్యార్థము అతనిని బయటికి పంపెను రామదత్తునకు ఇచ్చటి నుండి వెళ్లుటకు ఇష్టము లేకున్నను, అధికారి ఆదేశముతో బాధపడుచు బయటకు వెళ్లిపోయెను.

ఇప్పుడు మీరు చెప్పండి; రామదత్తుని అభీష్టమునకు విరుద్ధముగా, బలవంతముగా అతనిని సత్సంగము నుండి బయటకు పంపుట వలన అతనికి దుఃఖము కలిగినది. ఇది సత్యమే కదా ! మీరు మరొకమాట ఆలోచించి చెప్పండి; రామదత్తుడు తనకు తాను ఇన ఇష్టానుసారము యెవరి బలవంతము

లేకుండా సత్సంగము నుండి వెళ్లిపోయిన యెడల అతనికి దుఃఖము కలుగ గలదా ? కలుగనేరదని తెలియుచున్నది

సజ్జనులారా ! ఇప్పుడు మనము విచారించవలసిన ముఖ్య విషయ మేమనగా, రామ దత్తుడు రెండు పరిస్థితులలో సత్సంగము నుండి బయటికి వెళ్లవలసియే యున్నది. కాని అతడు స్వయముగా తనకు తాను తన ఇష్టాను సారము తస్సంగము నుండి బయటికి వెళ్లి నచో అతనికి దుఃఖము కలుగదు. అందుకు విరుద్ధముగా మరొకరు బలవంతముగా సత్సం గము నుండి పంపి వేసినపుడు అతనికి దుఃఖము కలుగును. అదే విధముగ మనుష్యు నకు మృత్యు సమయములో కలుగు దుఃఖ మునకు కారణము మృత్యువు కాదు. అతడు స్వయముగ ప్రపంచమును విడిచిపెట్టుటకు ఇష్టపడకుండుట కారణమగుచున్నది. ఈ ప్రపంచమును విడిచి పెట్టకుండ ఉండే కోరిక మనుష్యులలో ఎట్లు ఉత్పన్న మగుచున్నది ? దీనికి కారణము ప్రపంచ పదార్థముల యెడ మిక్కిలి మమకారము. ఈ మమకారము అజ్ఞా నము వలన కలుగుచున్నది. ఈ ప్రపంచము నందలి భూమి, ధనము, సంపత్తి, పుత్ర పౌత్రాదులెల్లరు తనవారు. వారి కొరకు నేను ఇంకా బ్రతికి ఉండవలెననే భావన దృఢముగ కలిగియున్న కారణము చేత అతనికి మృత్యు సమయములో ప్రపంచమును విడిచి పెట్టకూ డదను కోరిక బలముగా ఉత్పన్నమగుచున్నది. ఇది యెంతటి విచిత్రమైన అజ్ఞానము ! ఏ వస్తువు తనది కాదో, ఏదికేవలము ప్రయోగా ర్థము కొరకే లభించినదో, దానిని తనదని భావించుకొనుట అజ్ఞానము. ఈ శరీరము మరియు దీనికి సంబంధించిన భౌతిక పదా ర్థములు నావని తలచుకొనుచున్నాము. మన లోని ఆత్మరూప-అవినాశి ఆత్మతో మనకు పరిచయమే లేకుండా పోయినది. భస్మము కాగల ఈ పార్థివశరీరము, మట్టితో తయారైన ఈ భౌతిక కాయముతో మనకు మిథ్యామో హము కలుగుచున్నది. కాని (అనిల) అపా ర్థివ (అమృత) అవినాశి (వాయు) ఆత్మతో మనకు ప్రేమ లేదు. యోగీశ్వరుడైన శ్రీకృష్ణ భగవానుడు, కురుక్షేత్ర రణభూమిలో సంకట సమయమున అర్జునిని అజ్ఞానమును దూర మొనర్చుకొరకు ఈ విధముగ ఉపదేశించెను.

న జాయతె మ్రియతే వా కదా చిన్నాయం భూత్వా భవితావాన భూయః అజో నిత్య శ్శాశ్వతోఽయం పురాణోనహన్యతె హన్య మానె శరీరె ॥ -భగవద్గీత 2-20

హే ! అర్జునా ! ఈ ఆత్మ జన్మించదు, మరణించదు. ఇది ఒకప్పుడు లేకుండా పోదు. లేకుండా లేదు. ఈ ఆత్మ అజ-నిత్య-శాశ్వత మరియు సనాతనైనది. ఈ భౌతిక శరీరమును మాత్రమే మృత్యువు హరించును. (ఆత్మతో విముక్తమగును) "మృత్యు" సంజ్ఞ పొందును. ఏ విధముగానైతే శరీరమందు బాల్యావస్థ, యౌవనావస్థ, వృద్ధావస్థ, క్రమముగా ప్రాప్తిం చుచున్నవో, అదే విధముగ మృత్యువు తర్వాత ఆత్మకు రెండవ శరీరము ప్రాప్తించును. జ్ఞాన పురుషులు మృత్యువు వలన కలుగు శరీర పరివర్తనకు భయపడరు. హే అర్జునా !

"అంతవన్త ఇమేదేహా నిత్యస్యోక్తశ్శరీరిణః" -భగవద్గీత 2-18

ఈ నిత్య ఆత్మ యొక్క "శరీరము" నశించును. కాని ఈ "ఆత్మ" నశించదు. మర ణించదు. మరణింపబడదు.

"నైనం చిన్దన్తి శస్త్రాణి నైనం దహతి పావకః । న చైనం క్లేదయాన్త్యాపోన శోషయతి మారుతః ॥ -భగవద్గీత 2-23

ఆత్మను శస్త్రములు ఖండింపలేవు, అగ్ని కాల్చలేదు. జలము నానబెట్టలేదు, వాయువు శుష్కింపజేయలేదు.

ఈ విధముగ స్పష్టమగుచున్నదేమనగా మనము శరీరము కాదు. మృత్యువు శరీరము నకు కలుగుతుంది. ఆత్మకు కాదు.

ఋషి దయానందుడు సత్యము మరియు నిత్యమైన శివుని అన్వేషణలో మృత్యువు యొక్క రహస్యమును తెలుసుకొనుట కొరకు ఇంటి నుండి వెడెలెను. ఉత్తర భారతదేశములోని హిమాలయ పర్వ ప్రాంతమందలి సమస్త సాధు సంతులను దర్శించి, చివరగా స్వామీ దండీ విరజానంద సరస్వతి మథుర గారి వద్ద వేదవిద్యా జ్ఞానతత్వ ప్రకాశము గ్రహించెను. గురువు గారి ఆజ్ఞతో, వేద విరుద్ధ మత సాంప్రదాయ కురీతులను ఖండించుచు పలు చోట్ల శాస్త్రార్థములను చేసెను. అతని అమర గ్రంథము సత్యార్థ ప్రకాశము. అయితే అతనికి విరుద్ధముగా కొన్ని మత సాంప్రదాయ శక్తులు కుట్రపన్ని అతనికి 18 మారులు విశమిచ్చి చంపుటకు ప్రయత్నించిరి. వారి చివరి ప్రయో గము వలన అతని శరీరము అస్వస్థమై మృత్యువును ఆహ్వానించినది. ఈ అంతిమ వేళలో కూడా అతడు చిరునవ్వుతో ఈశ్వర సంకల్పమును ఆహ్వానించెను. విష ప్రభావ ముతో శరీరము ఛిద్రమై విషము గ్రక్కుమం డెను. అట్టి స్థితిలో కూడా అతడు శారీరిక బాధను లెక్క చేయలేదు.

"హే దయామయ ప్రభూ ఈశ్వరా ! నీ సంకల్పము నెరవేరు గాక ! నీ లీల మంచిదే" యని ఈశ్వరుని ప్రార్థించుచు తన పార్థివ శరీరమును స్వేచ్ఛగ మృత్యువునకర్పించెను. దయానందుడు మృత్యువునకు భయపడలేదు. మరణము శరీరమునకు కలుగుతుంది. ఆత్మకు కాదను తత్వజ్ఞానము తెలిసిన వాడు కావున అతడు నిర్భయముగ నవ్వుచు తన పార్థివ శరీరమును మృత్యువునకర్పించెను. ఆత్మ ప్రభు ఆజ్ఞతో మరొక చోటికి వెళ్లను.

సజ్జనులారా ! నేటి సత్సంగములో మనము వేదమాత సందేశము **"వాయు తనిల మమృతం మథే దరి భస్మాంతం శరీరం"** అను మంత్రముపై విశేషముగా విచారించుకొని నాము. శరీరము మరియు ఆత్మ యొక్క సంయోగమే జీవనము. ఇందు శరీరము మరణ ధర్మము గలది. క్షణభంగురము మరియు అనిత్యమైనది. కాని ఆత్మ అజ రము-అమరము-అభౌతికము మరియు శాశ్వత సత్తా కలిగినది. ఇచ్చట మనము ఒక ముఖ్యమైన విషయమును గుర్తుంచుకొనవలసి యున్నది. శరీరము చివరగా భస్మము కాగలదు. ఇది మరణ ధర్మమైనది. అంత మాత్రమున ఇది త్యాజ్యము కాదు. విడువదగి నది, నిరర్థకమైనది ఎంత మాత్రము కాదు. ఎందుకనగా ఇది ఆత్మ యొక్క దివ్యరథము. జీవనయాన దైవీనౌక, ఇది ప్రియమైన పరమాత్మను దర్శింపజేయు మందిరము. దీని ఆధారము మరియు సాధనములతో జీవాత్మ (క్రిబెస్మర) తన ఆత్మశక్తితో (కృతం స్మర) ఆత్మ నిరీక్షణ పూరకముగా అనాసక్త భావముతో నిరంతరము సత్కర్మ (యజ్ఞకర్మ) సాధనలతో ఈ చరమ సాధ్య "ఓమ్" ప్రభువును పొంద గలదు. ఈ విధముగా జీవాత్మ ధన్యము, సఫలము మరియు కీర్తిదాయకమగుచు అమరత్వము పొంది మృత్యుంజయా కాగ లదు. ఇది యంతయు ఎట్లు సంభవమ గునో ముందు కథాక్రమములో మంత్ర ప్రకాశ ములో విచారించి తెలుసు కొనగలము.

ఆర్య సమాజ్ మహబూబనగర్‌లో శ్రావణ వేద సప్తాహ సందర్భమున ఆచార్య విశ్వశ్రవః బ్రహ్మత్వంలో జరిగిన యజ్ఞంలో సస్వర వేద పఠనము చేసిన దయానంద విద్యా మందిర్ విద్యార్థుల బృందం. విద్యార్థులను చిత్రంలో చూడవచ్చును.

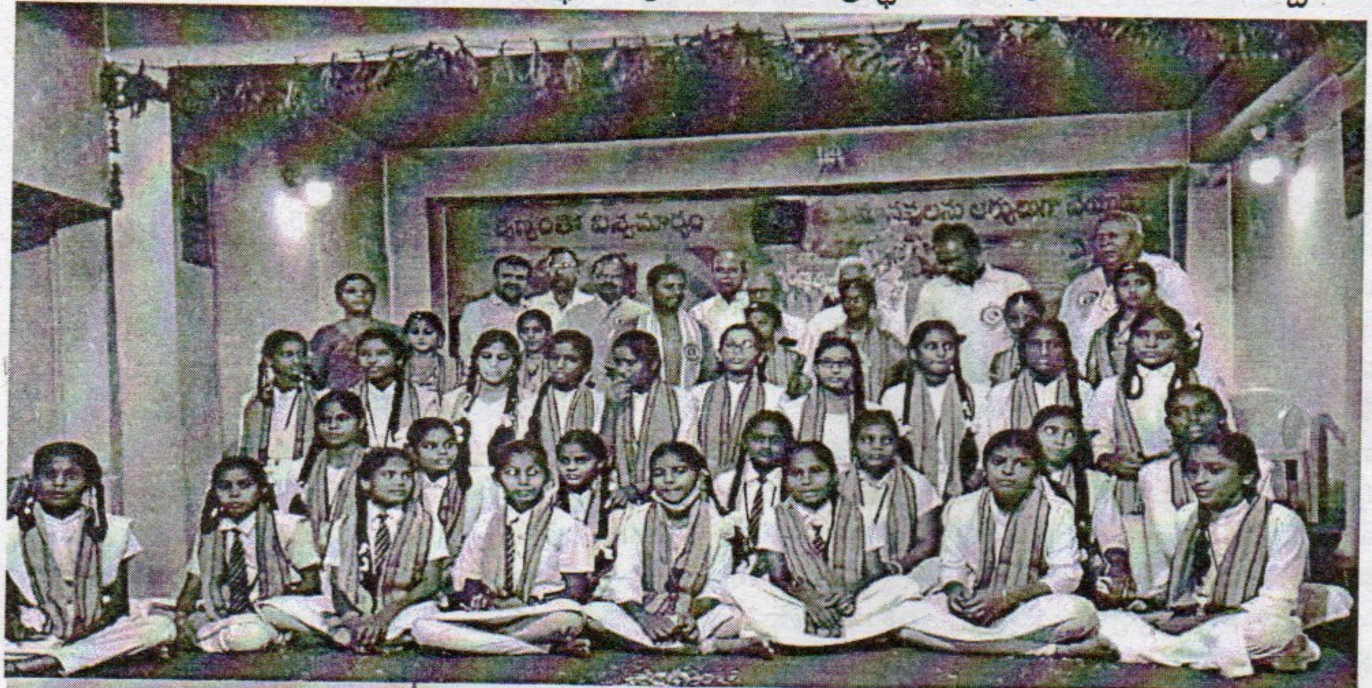

ఆర్య సమాజ్ ఊట్కూర్‌లో నిర్వహించిన శ్రావణి వేద ప్రచార సందర్భమున ఆర్య ప్రతినిధి సభ ఉపాధ్యక్షులు శ్రీ హరికిషన్ వేదాలంకార్ మరియు ఆచార్య విశ్వశ్రవః గారి ఆధ్వర్యంలో ఓ3మ్ ధ్వజారోహణము చేయుచున్న ఆర్య సమాజ్ ఊట్కూర్ అధికారులు, కార్యకర్తలు.

ఆర్య సమాజ్ రాష్ట్రపతి రోడ్, సికింద్రాబాద్‌లో

శ్రావణి పూర్ణిమ నాడు నిర్వహించిన ఆర్య సత్యాగ్రహ బలిదాన దినములో పాల్గొని మాట్లాడుచున్న శ్రీ ఆచార్య సోమ్‌దేవ్ శాస్త్రి గారు. ఈ శ్రావణి ఉపాకర్మ కార్యక్రమములో పాల్గొన ప్రముఖులలో ఆచార్య ధనంజయ్ గారు, ఆచార్య ఆనంద్ ప్రకాశ్ గారు, శ్రీ ఉదయనాచార్య గారు, సభ అధ్యక్షులు శ్రీ విఠల్ రావు గారు, ఆర్య సమాజ్ అధ్యక్షులు శ్రీ మాశెట్టి శ్రీనివాస్ గారు, సభ ఉపాధ్యక్షులు శ్రీ లక్ష్మణ్ సింగ్ గారు, శ్రీ మట్టి కృష్ణా రెడ్డి గారు, సభ ఉపాధ్యక్షురాలు శ్రీమతి వసుధ శాస్త్రి గారు, శ్రీ అరవింద్ శాస్త్రి గారు మరియు సభ మంత్రి శ్రీ వెంకరఘు రాములు గారు తదితరులు ఉన్నారు. సభ ఉపాధ్యక్షులు శ్రీ హరికిషన్ వేదాలంకార్ గారు సభను నిర్వహించారు మరియు శ్రీమతి వసుధా అరవింద్ శాస్త్రి గారు బ్రహ్మగా యజ్ఞమును నిర్వహించారు. ఈ సభలో స్వతంత్ర సమరంలో ఆర్య సమాజ పాత్రను విస్మరించటం సరియైనది కాదని తీర్మానిస్తూ ప్రధాన మంత్రి శ్రీ నరేంద్ర మోదీ గారిని జరుగుచున్న పొరపాటును సరిదిద్దాలని కోరారు. క్రింది చిత్రంలో శ్రీ కోడూరి సుబ్బారావు గారిని సన్మానించుచున్నారు.

ఆర్య సమాజ్ మహబూబ్‌నగర్‌లో

నిర్వహించబడిన శ్రావణి వేద సప్తాహ కార్యక్రమములో పూర్ణాహుతి రోజన ఆర్య ప్రతినిధి సభ ప్రముఖులు మరియు ఆర్య సమాజ ప్రముఖులు పాల్గొని కార్యక్రమమును దిగ్విజయముగా సంపన్నం చేశారు. ఏదు రోజులు నిర్వహించిన ఈ కార్యక్రమములో యజ్ఞము ఆచార్య విశ్వశ్రవః బ్రహ్మత్వంలో జరిగినది. పాలొన్న ప్రముఖుల్లో ఆర్య ప్రతినిధి సభ అధ్యక్షులు శ్రీ విఠల్ రావు ఆర్య గారు, సభ ఉపాధ్యక్షులు డా॥ సిహెచ్. చంద్రయ్య గారు, సభ ఉపాధ్యక్షులు శ్రీ వి. శివ్‌కుమార్ గారు, ఆర్య సమాజ అధ్యక్షులు డా॥ భారద్వాజ్ గారు, గౌ॥ అధ్యక్షులు డా॥ మురళీధర్ రావు గారు, శ్రీ లక్ష్మా రెడ్డి గారు, శ్రీ భద్రయ్య గారు మరియు శ్రీ కృష్ణా రెడ్డి గారు తదితరులు

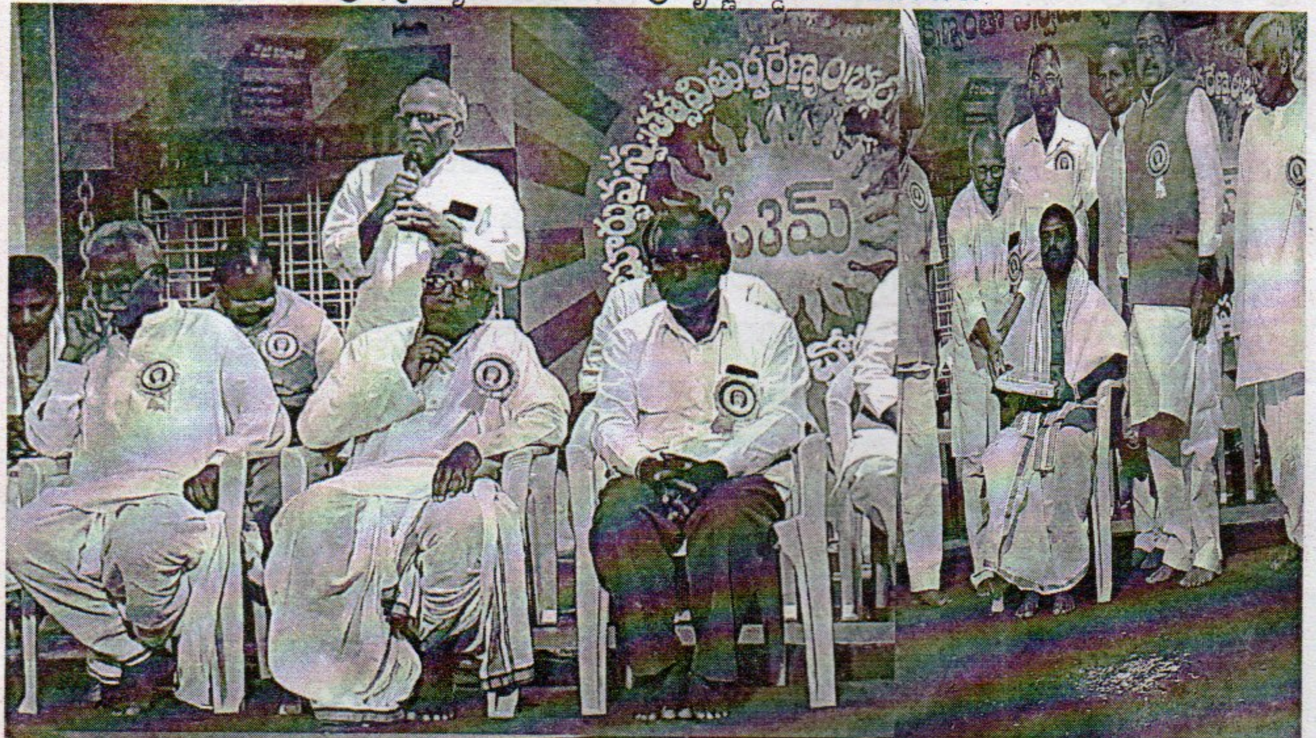

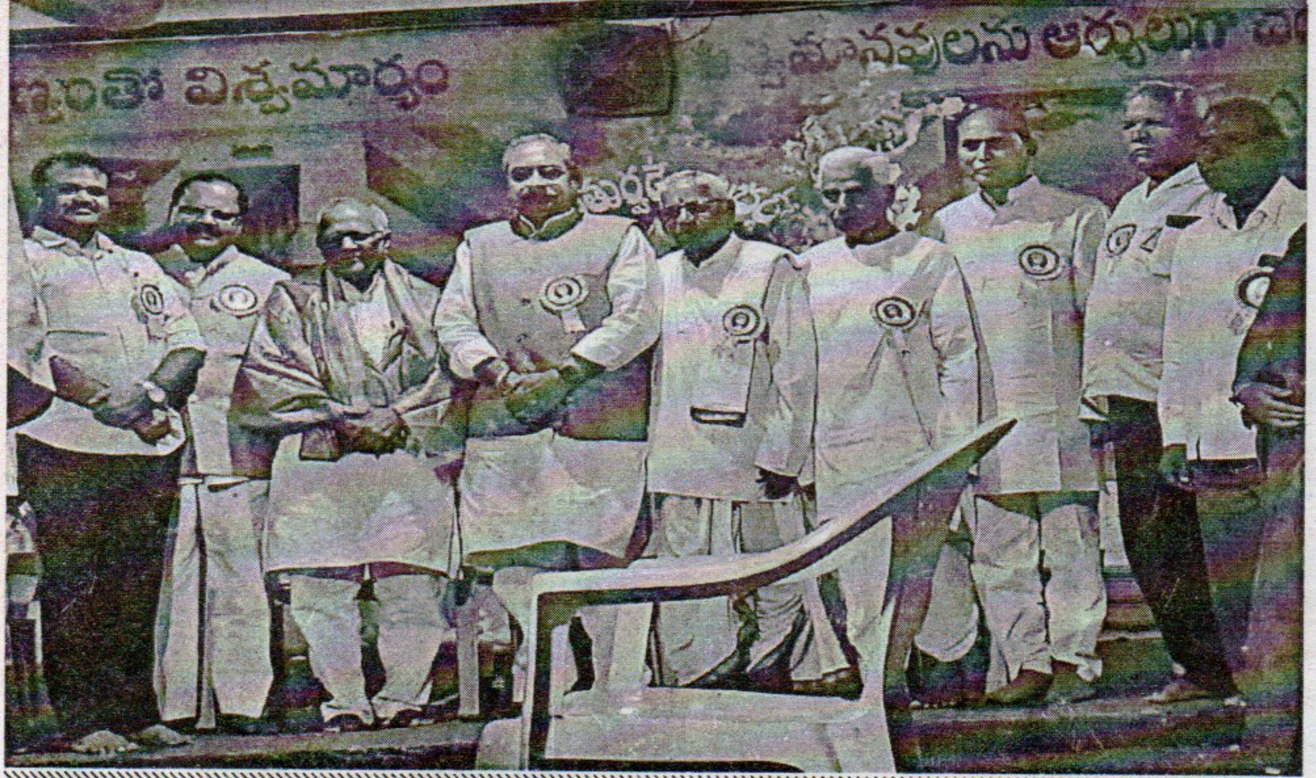

॥ ओ३म् ॥

सैलेन्ट हार्टएटाक (हृदयआघात) के बाद पुर्नजन्म पाने वाले
आर्य प्रतिनिधि सभा, आ.प्र.- तेलंगाना के प्रधान द्वारा
सभा के तत्वावधान में अपनी आयु व स्वास्थ्य की कामना से अपने जन्म स्थान में आयोजित

द्वि-दिवसीय यजुर्वेदीय महायज्ञ में

आत्मीय निमन्त्रण

दि. 15, 16 अक्टूबर 2022 शनिवार व रविवार

स्थान : गुरुमठकल गाँव, बोरबण्डा ताण्डा

गुरुमठकल गाँव (कर्नाटक), नारायणपेट से २० कि.मी. दूर पर स्थित है। बोरबण्डा ताण्डा गुरुमठकल गाँव से, गुरुमठकल-यादगीर मार्ग पर गुरुमठकल से ४ कि.मी. दूर पर है। गुरुमठकल गाँव को परिगि-कोडंगल से होते हुए आ सकते है या नारायणपेट से एक्लासपूर-पुटपाक मार्ग से होते हुए आ सकते है।

यजुर्वेदीय महायज्ञ में भाग लेकर आशीर्वाद देने के लिए राष्ट्रीय नेता, महात्मा व विद्वान अतिथि भाग ले रहे है।

यज्ञ ब्रह्मा : **आचार्य सोमदेव शास्त्री जी** मुंबई

वेद पाठी : **गुरुकुल पिडिचेड व गुरुकुल मलकपेट के विद्यार्थी**

मुख्य अतिथि : **स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती जी** दिल्ली

विशिष्ट अतिथि : **स्वामी आर्यवेश जी** दिल्ली

अतिथि : **स्वामी ब्रह्मानन्द सरस्वती जी** पाता राजमपेट, कामारेड्डी
आचार्य उदयन जी गुरुकुल पिडिचेड सिद्दिपेट
आचार्य धनञ्जय जी गुरुकुल पौंधा, देहरादून
स्वामी आदित्यवेश जी दिल्ली
सुश्री बहन प्रवेश जी दिल्ली
सुश्री बहन पूनम जी दिल्ली

श्री विट्ठल राव आर्य जी के निमंत्रण पर अनेक विद्वान, आचार्य, प्रमुख महानुभाव व आर्य बन्धु तथा बन्धुगण द्वि-दिवसीय महा यज्ञ के कार्यक्रम में भाग लेने के लिए आ रहे है। आप सभी से निवेदन है कि सभी महानुभाव मेरे इस सादर निमंत्रण को स्वीकार कर महायज्ञ के कार्यक्रम में अधिक से अधिक संख्या में भाग लेकर कार्यक्रम को सफल बनाएं।

भवदीय : **श्री विट्ठल राव आर्य**

प्रधान, आर्य प्रतिनिधि सभा आ.प्र- तेलंगाना व महामंत्री सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली

Date of Publication 2nd and 17th of every Month, Date of Posting 3rd and 18th of every Month
आर्य जीवन 18-08-2022 Registered-Reg. No. HD/783/2021-23 RNI No. 52990/93

ఆర్య జీవన్

హిందీ-తెలుగు ద్విభాషా పక్ష పత్రిక

Editor : Sri Vithal Rao Arya, M.Sc., L.L.B., Sahityaratna.
Arya Pratinidhi Sabha A.P.-Telangana, Sultan Bazar, Hyderabad-500095.
Phone : 040-24753827, 24756983, Narendra Bhavan : 040 24760030

Annual Subscription Rs. 250/- సంపాదకులు : విఠల్ రావు ఆర్య, ప్రధాన సభ

To,

श्री प्रधान, मन्त्री जी
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा
१५, हनुमान रोड,
नई दिल्ली-१

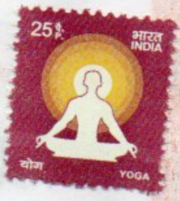

॥ ఓ౩మ్ ॥

సైలెంట్ హార్ట్ఎటాక్ (గుండెపోటు) తదుపరి పునర్జన్మ పొందిన
ఆర్య ప్రతినిధి సభ ఆ.ప్ర.-తెలంగాణ అధ్యక్షులైన శ్రీ విఠల్ రావు ఆర్య గారి ద్వారా
సభ ఆధ్వర్యంలో ఆయుః ఆరోగ్యాన్ని కోరుతూ జన్మస్థానంలో ఏర్పాటు చేయబడిన

ద్విదివసీయ యజుర్వేదీయ మహాయజ్ఞమునకు

ఆత్మీయ ఆహ్వానము

తేది 15, 16 అక్టోబర్ 2022 శనివారము, ఆదివారము

స్థలము : గురుమిట్కల్, బోరబండ తాండ

గురుమిట్కల్ ఊరు (కర్ణాటక), నారాయణపేట్ నుండి 20 కి.మీ. దూరంలో ఉంటుంది. బోరబండ తాండ
గురుమిట్కల్ ఊరు నుండి గురుమిట్కల్-యాదగీర్ రోడ్డు పైన 4 కి.మీ. దూరంలో ఉంది.
గురుమిట్కల్‌కు పరిగి-కొడంగల్ నుండి రావచ్చును లేదా నారాయణపేట్ నుండి ఎక్లాస్‌పూర్-పుటపాక అవుతూ రావచ్చును.

**యజుర్వేదీయ మహాయజ్ఞములో పాల్గొని ఆశీర్వదించుటకు
జాతీయ స్థాయి మహాత్ములు, అతిథులు పాల్గొనుచున్నారు.**

యజ్ఞబ్రహ్మ : ఆచార్య సోమదేవ్ శాస్త్రి గారు ముంబయ్
వేద పాఠకులు : గురుకుల్ పిడిచెడ్ & గురుకుల్ మలక్‌పేట్

ముఖ్య అతిథి : స్వామి ప్రణవానంద్ సరస్వతి గారు ఢిల్లీ
విశిష్ట అతిథి : స్వామి ఆర్యవేశ్ గారు ఢిల్లీ

అతిథులు : స్వామి బ్రహ్మానంద సరస్వతి గారు పాత రాజంపేట్, కామారెడ్డి
ఆచార్య ఉదయన్ గారు గురుకుల్ పిడిచెడ్ సిద్ధిపేట్
ఆచార్య ధనఞ్జయ్ గారు గురుకుల్ పౌంధ, దెహరాదూన్
స్వామి ఆదిత్యవేశ్ గారు ఢిల్లీ
సుశ్రీ బహన్ ప్రవేశ్ గారు ఢిల్లీ
సుశ్రీ బహన్ పూనమ్ గారు ఢిల్లీ

శ్రీ విఠల్ రావు ఆర్య గారి ఆహ్వానం మేరకు అనేక మంది
ఆర్య బంధువులు, బంధువులు ఆచార్యులు, విద్వాంసులు, ప్రముఖులు
ఈ కార్యక్రమంలో పాల్గొనుచున్నారు, కావున తమరందరికి సాదర అహ్వానము

ఆహ్వానకర్త : శ్రీ విఠల్ రావు ఆర్య
అధ్యక్షులు ఆర్య ప్రతినిధి సభ, ఆ.ప్ర.-తెలంగాణ & మహామంత్రి సార్వదేశిక్ ఆర్య ప్రతినిధి సభ, క్రొత్త ఢిల్లీ

THE VIEWS & THE NEWS PUBLISHED IN THIS ISSUE MAY NOT NECESSARILY BE AGREEABLE TO THE EDITOR.

Editor : Sri Vithal Rao Arya E-mail : acharyavithal@gmail.com, Mobile : 09849560691.

సంపాదకులు : శ్రీ విఠల్ రావు ఆర్య, ప్రధాన సభ, ఆర్య ప్రతినిధి సభ ఆ.ప్ర.-తెలంగాణ, సుల్తాన్ బజార్, హైదరాబాద్-95. Ph : 040-24753827, E-mail : acharyavithal@gmail.com
संपादक : श्री विट्ठल राव आर्य, प्रधान सभा ने सभा की ओर से आकृति प्रिन्टर्स, चिक्कड़पल्ली में मुद्रित करवा कर प्रकाशित किया ।
प्रकाशक : आर्य प्रतिनिधि सभा, आं.प्र.- तेलंगाना, सुल्तान बाज़ार, हैदराबाद-500 095. Narendra Bhavan Ph : 040 24760030